

वार्षिक
सदस्यता शुल्क
100/-

द्रविड भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र



गौतम बुद्ध

बाबा साहेब डॉ० अम्बेडकर

फरवरी-2026

वर्ष - 18

अंक : 01

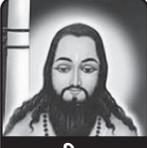
मूल्य : 5/-



संत कबीर दास



संत रविदास जी



घासीदास



बिरसामुण्डा



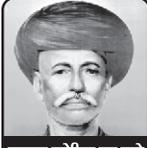
पेरियार रामास्वामी



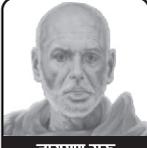
छत्रपति शाहजी महाराज



सन्त गाडगे



महात्मा ज्योतिबा राव फुले



नारयण गुठ



साक्थी बाई फुले



काशीराम

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subscribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा),
मा. राम अवतार चौधरी (सहा.अभि. जलकल विभाग),
मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम
(दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621

राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :

सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.),

मो.: 9935363730, 9170836363

योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल)

मो.: 8299162841

हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख -

रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030

क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :

40/69, डी-5, श्यामलाल का हाता, परेड,

कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631

ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :

राजकुमार, उन्नाव

मो.: 9889273743, 9392660070

हरियाणा राज्य :

डा. रमेश रंगा, ग्राम-सराय, औरंगाबाद, पो.-

बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), 09416347052

कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड.

यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह

राजपूत, एड. रामकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड.

सुशील कुमार, कानपुर

मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार

कार्यालय : ग्रा. व पो.-रामतौरिया, जिला-छतरपुर

छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख

रमा गर्जभिये, मो.: 7828273934

दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260,

हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट-III, बदरपुर, नई

दिल्ली-44, मो. : 09540552317

राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर,

दुकान नं.-1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने,

अलवर, जिला-अलवर-301001,

मो. : 09887512360, 0144-3201516

बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.-08058198233

संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :

ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला-महोबा (उ.प्र.)

मो. : 9005204074, 8756157631

E-mail : dravinbharat1@gmail.com

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी

उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.-रिवई (सुनैचा), जिला महोबा

से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू

नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की

सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या

विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवाहित होने पर लेखक ही

उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय

में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतः अवेतनिक

एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें -

भारतीय स्टेट बैंक

पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर

खाता सं.-33496621020

IFSC CODE-SBIN0001784



दोष दुश्मनों का नहीं, हमारा भी है-काशीराम

(इन्दौर)

“जिस गैर बराबरी से हम दलित-शोषित समाज के लोग पीड़ित हैं, उस गैर बराबरी की मिसाल दुनिया के किसी भी मुल्क में नहीं मिलती, लेकिन इसका दोषी जितना दुश्मन है उससे ज्यादा हम दोषी हैं।”

उपरोक्त विचार मा. काशीराम जी. डी-एस4 के संस्थापक अध्यक्ष ने 29 फरवरी, 1984 को इन्दौर, राजवाड़ा चौक पर आयोजित ‘समता और स्वाभिमान के लिए संघर्ष’ के देशव्यापी आन्दोलन के अन्तर्गत नियोजित आमसभा में अपने अध्यक्षीय भाषण करते हुए प्रकट किये।

आपने अध्यक्षीय भाषण का प्रारम्भ करते हुए कहा कि डी-एस4 को बनाने के बाद इन्दौर आने का उनका प्रथम अवसर है। यहाँ के दलित-शोषित समाज के मेरे भाईयों को डी-एस4 के बारे में थोड़ी सी जानकारी होगी किन्तु जब हमने ‘समानता और स्वाभिमान के लिए संघर्ष’ इस देशव्यापी आन्दोलन की शुरुआत की और इन्दौर शहर इस मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा शहर तथा राष्ट्रीय राजमार्ग पर होने के कारण इसे नजरअंदाज न करते हुए डी-एस4 के बारे में आप सभी भाईयों को इसकी जानकारी प्रदान करने हेतु हमने इस मीटिंग का आयोजन इन्दौर में किया। आपने कहा कि तमन्ना होने के बावजूद भी केन्द्र की तरफ से तथा उनकी तरफ से सभी क्षेत्रों में ध्यान देना मुश्किल काम है, किन्तु यहाँ के हमारे कार्यकर्ता इस बात को आगे बढ़ाने के लिए अपनी ताकत के हिसाब से लगे हुए हैं तथा अन्य प्रदेशों के साथियों के साथ इस सामाजिक अभियान में कदम से कदम मिलाकर चलने की कोशिश कर रहे हैं इसलिए मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

सामाजिक स्थिति का जायजा लेते हुए आपने कहा कि दलित-शोषित समाज, साधन ही समाज है। इस समाज को हजारों सालों से लाचार रखा गया है, मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया है। जो इस देश में 85 प्रतिशत है और आज भी इस देश का हुक्मरान 15 प्रतिशत वर्ग (ब्राह्मण, बनिया, जमींदार) बना बैठा है और 85 प्रतिशत बहुजन समाज को लाचार रखने की पूरी कोशिश कर रहा है। इस हालत में हमें दुश्मनों को दोष देने से काम नहीं बनेगा बल्कि हर पहलू पर हमें स्वयं तैयार होना पड़ेगा तथा अपनी बुद्धि, ताकत और धन का इस्तेमाल करते हुए अपना आन्दोलन चलाना होगा।

डी-एस4 के बारे में जानकारी देते हुए आपने कहा कि डी-एस4 दलित-शोषित समाज का संघर्ष करने वाला संगठन है। यह एक छोटा सा नाम है जिसका पूरा नाम है दलित-शोषित समाज संघर्ष समिति। दलित-शोषित समाज अनगिनत समस्याओं से घिरा है इसलिए संघर्ष करने के लिए हमारे पास अनेक पहलू हैं। इस सभी संघर्ष के पहलू पर हम एक साथ संघर्ष नहीं कर पायेंगे। इसलिए हमारी जरूरत के हिसाब से हमें एक के बाद एक पहलू को छोड़ना है। जब से डी-एस4 का निर्माण किया गया उसके दो साल पश्चात यानि 6 दिसम्बर 1983 को कन्याकुमारी से हमने डी-एस4 को संघर्ष से उतारा है।

‘समता और स्वाभिमान के लिए संघर्ष’ के विषय पर बताते हुए आपने कहा, “हमने सोचा कि इस देश को आजादी मिलने के पश्चात 36 सालों के अरसे में भी जो सामाजिक और आर्थिक गैर-बराबरी बरकरार है, इसके बारे में तमाम दलित-शोषित समाज को शिक्षित किया जाये।

इसलिए कन्याकुमारी से ‘साइकिल मार्च’ का प्रारम्भ करते हुए हमने इस देश के हर जिले तथा तहसील को इस देश में हर राष्ट्रीय राजमार्ग तथा स्टेट मार्ग से छूने की कोशिश की। आज की मीटिंग भी इसी साइकिल मार्च के स्वागत में रखी गयी। इस प्रकार की 1000 मीटिंगें कुछ छोटी, कुछ बड़ी और 40-50 बहुत बड़ी मीटिंगें होंगी और हो रही हैं।

आन्दोलन के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए आपने कहा कि जब हम ‘समता और स्वाभिमान’ की बात करते हैं तो हमें जानना जरूरी है कि ‘गैर बराबरी’ क्या है? आपने कहा कि सरकारी आंकड़ों के अनुसार इस देश के अकेले बिड़ला (बनिया) के पास इस देश के सम्पूर्ण S/C, S/T के लोगों से ज्यादा सम्पत्ति है। इस तरह एक बनिया इस देश के 15-20 करोड़ लोगों के बराबर है। गैरबराबरी की इससे बड़ी मिसाल दुनिया के किसी भी मुल्क में नहीं मिलती। यह आर्थिक गैर-बराबरी की एक मिसाल है और सामाजिक गैरबराबरी तो आप और हम भोग ही रहे हैं कि दलित-शोषित समाज के साथ कितना अपमानजनक व्यवहार किया जाता है। ऐसी स्थिति में हम दुश्मनों को कोसते रहे तो काम नहीं चलेगा। इसीलिए समता प्राप्त करने के लिए हमें कुछ करना होगा क्योंकि यदि हम सोचें कि जिन लोगों ने इस गैरबराबरी को बढ़ाया है, वे हमें बराबरी हासिल करके देंगे तो हम अपने आप को धोखा देने जैसी बात है। बाबा साहेब के संघर्ष से हमें राजनीति में समानता प्राप्त हुई मगर इस राजनीति के प्रति उनकी जो आशंका थी वह भी सही साबित हुई। आज कुछ मुठठीभर लोग अपने धन से करोड़ों गरीब दलित-शोषित समाज के वोट खरीदते हैं और धन के बल पर गरीबों के वोटों का बाजार बनाया जा रहा है। वोट खरीदकर सरकार बनती है और कहा जाता है कि विश्व में सबसे बड़ा प्रजातंत्र हमारे देश में है।

जनसमूह का आह्वान करते हुए आपने कहा कि यदि हमें इस देश से सही प्रजातंत्र लाना है तो हमें दुश्मनों से अपेक्षा करने की बजाय या उन्हें दोष देने के बजाय खुद कुछ करना होगा। अपने वोटों की कीमत समझनी होगी। बहुजन समाज को संगठित करना होगा, खुद की ताकत खुद बनानी होगी, डी-एस4 इसी काम के लिए स्थापित की गई है। हर आन्दोलन की पहली सीढ़ी जनजागृति है तथा इस कार्यक्रम से हम देशव्यापी जागृति इस देश के करोड़ों लोगों में लाने का प्रयास कर रहे हैं। अपना भाषण समाप्त करते हुए आपने जनता से अपील की कि वे डी-एस4 के साथ जुड़े तथा बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर के सपनों को साकार करने में सहयोग दें, जिस मंजिल की ओर डी-एस4 जल्द ही पहुँच रहा है।

जनसभा को सोहनलाल साँधिया (भोपाल), अर्जुन सिंह धारू (महू), अभंग साहेब (नासिक), अनंत राव फुले (पूना) ने सम्बोधित किया। सरदार शेर सिंह (पूर्व मेयर इंदौर) मंच पर थे। कार्यक्रम का संचालन सुभाष दावरे के किया तथा इंदौर शाखा के संयोजक बी.के. ननावरे ने आभार व्यक्त किया।

(बहुजन संगठक, वर्ष 4, अंक 51, 26 मार्च 1984)

सामार :

मा. काशीराम साहेब
के ऐतिहासिक भाषण खण्ड-2
पेज संख्या 272 से 274 तक
ए. आर. अकेला

रहस्य का प्रयोग कैसे करें

आप रचनात्मक निर्माता हैं। आकर्षण के नियम द्वारा जीवन का निर्माण करने की प्रक्रिया आसान है। महानतम उपदेशकों और अवतारों ने अपने अद्भुत कार्यों द्वारा असंख्य तरीकों से हमें यह रचनात्मक प्रक्रिया बताई है। कुछ महान उपदेशकों ने नीतिकथाओं के माध्यम से हमें ब्रह्मांड के काम करने का तरीका बताया है। उनकी कहानियों की बुद्धिमत्ता सदियों से हमारे बीच मौजूद है और किंवदंती बन चुकी है। वर्तमान युग के कई लोगों को तो इस बात का एहसास ही नहीं है कि इन कहानियों में जिंदगी की सच्चाई छिपी है।

जेम्स रे

अलादीन और उसके चिराग की कहानी के बारे में सोचें। जब अलादीन चिराग उठाता है और उसकी धूल साफ करता है, तो जिन्न फौरन बाहर निकल आता है। जिन्न हमेशा एक ही बात कहता है:

“आपकी इच्छा ही मेरा आदेश है।”

कहानी में कहा गया है कि जिन्न तीन इच्छाएँ पूरी करता है, लेकिन अगर आप कहानी की तह तक जाएँगे, तो इसकी कोई सीमा नहीं है। आप जितनी भी इच्छाएँ करेंगे, वे सब पूरी होंगी।

एक इच्छा के बारे में सोचें।

अब इस उपमा को अपने जीवन पर लागू करें। याद रखें, अलादीन को अपनी मनचाही चीज़ माँगनी होती है। फिर ब्रह्मांड जिन्न बन जाता है। विभिन्न परंपराओं ने इसके अलग-अलग नाम दिए हैं – आपका रक्षक देवदूत, आपका उच्चतर स्वरूप। हम इस पर कोई भी लेबल लगा सकते हैं और अपने लिए सबसे अच्छी तरह काम करने वाले लेबल को चुन सकते हैं, लेकिन हर परंपरा ने हमें बताया है कि कोई चीज़ है, जो हमसे ज्यादा बड़ी है। और जिन्न हमेशा एक ही बात कहता है:

“आपकी इच्छा ही मेरा आदेश है।”

यह अद्भुत कहानी दर्शाती है कि किस तरह आपने ही अपनी पूरी जिंदगी और अपने पास मौजूद हर चीज़ को खुद बनाया है। जिन्न ने तो सिर्फ आपके हर आदेश का पालन किया है। जिन्न आकर्षण का नियम है और यह हमेशा मौजूद है। आप जो भी सोचते, बोलते और करते हैं, उसे यह जिन्न हमेशा सुन रहा है। जिन्न मान लेता है कि आप जिस भी चीज़ के बारे में सोचते हैं, उसे पाना चाहते हैं। यह मान लेता है कि आप जिस भी चीज़ के बारे में बोलते हैं, उसे पाना चाहते हैं। यह मान लेता है कि आप जिस भी चीज़ पर काम करते हैं, उसे पाना चाहते हैं। आप ब्रह्मांड के मालिक हैं और जिन्न यहाँ पर आपकी सेवा के लिए मौजूद है। जिन्न कभी आपके आदेशों पर सवाल नहीं करता है। आपके मन में जैसे ही विचार आता है, जिन्न व्यक्तियों, परिस्थितियों और घटनाओं के माध्यम से आपकी इच्छा पूरी करने के लिए ब्रह्मांड को फौरन सक्रिय कर देता है।

रचनात्मक प्रक्रिया

रहस्य की रचनात्मक प्रक्रिया बाइबल की न्यू टेस्टामेंट से ली गई है। इससे आपको यह सरल मार्गदर्शन मिलता है कि अपनी मनचाही चीज़ पाने के तीन आसान कदम कौन से हैं।

कदम 1 : माँगें

लीसा निकोल्स

पहला कदम माँगना है। ब्रह्मांड को आदेश दें। ब्रह्मांड को बता दें कि आप क्या चाहते हैं। ब्रह्मांड आपके विचारों पर प्रतिक्रिया करता है।

बॉब प्रॉक्टर

आप सचमुच क्या चाहते हैं? बैठ जाएँ और उस चीज़ को एक कागज पर लिख लें। वर्तमान काल में लिखें। आप यह लिखकर शुरू कर सकते हैं, “मैं इस समय इसलिए इतना खुश और कृतज्ञ हूँ, क्योंकि...” और फिर स्पष्ट करें कि आप अपने जीवन के हर क्षेत्र को कैसा बनाना चाहते हैं।

आपको चुनाव करना होता है कि आप क्या चाहते हैं, लेकिन आपको इस बारे में स्पष्ट रहना होगा कि आप वास्तव में क्या चाहते हैं। यह आपका काम है। अगर आप स्पष्ट नहीं हैं, तो आकर्षण का नियम आपको आपकी मनचाही चीज़ नहीं दे सकता। अगर आप मिश्रित फ्रीक्वेंसी भेजेंगे, तो आपको सिर्फ मिश्रित परिणाम ही मिल सकते हैं। शायद जिंदगी में पहली बार यह पता लगाएँ कि आप वास्तव में क्या चाहते हैं। जब अब आप जान चुके हैं कि आप कुछ भी पा सकते हैं, बन सकते हैं या कर सकते हैं और कोई सीमा नहीं है, तो बताएँ कि आप क्या चाहते हैं?

माँगना रचनात्मक प्रक्रिया का पहला कदम है, इसलिए माँगने की आदत डाल लें। अगर आपको विकल्प चुनना हो, लेकिन आप यह तय नहीं कर पा रहे हों कि किस राह पर जाएँ, तो तो मार्गदर्शन माँगें। आपको जिंदगी के किसी भी क्षेत्र में असफल होने की जरूरत नहीं है। बस माँग लें।

डॉ. जो विटाल

यह सचमुच मजेदार है। यह तो वही बात हो गई, जैसे ब्रह्मांड आपका कैटेलाॅग हो। आप इसके पन्ने पलटते हैं और कहते हैं, “मैं इस घटना को पसंद करूँगा। मैं उस चीज़ को पसंद करूँगा। मैं ऐसा व्यक्ति बनना पसंद करूँगा।” आप ब्रह्मांड को अपना ऑर्डर दे देते हैं। यह दरअसल इतना ही आसान है।

आपको बार-बार माँगने की जरूरत नहीं है। बस एक बार माँगना ही काफी है। यह किसी कैटेलाॅग से ऑर्डर देने जैसा है। आप सिर्फ एक बार ही किसी चीज़ का ऑर्डर देते हैं। एक बार ऑर्डर देने के बाद आपके मन में यह शंका नहीं होती है कि आपका ऑर्डर पहुँचा होगा या नहीं। आप घबराकर दूसरी बार, तीसरी बार या चौथी बार ऑर्डर नहीं देते हैं। आप सिर्फ एक बार ऑर्डर देते हैं। यही रचनात्मक प्रक्रिया में भी होता है। पहला कदम सिर्फ इस बारे में स्पष्ट होना है कि आप क्या चाहते हैं। अगर आपने अपने दिमाग में स्पष्ट कल्पना कर ली है, तो आपने माँग लिया है।

कदम 2 : यकीन करें

लीसा निकोल्स

दूसरा कदम यकीन करना है। यकीन करें कि वह चीज़ आपकी हो चुकी है। मैं इसे अटल आस्था कहना पसंद करती हूँ। अदृश्य में यकीन करना।

आपको यकीन करना होगा कि वह चीज़ आपको मिल चुकी है। आपको विश्वास होना चाहिए कि जिस पल आपने उसे माँगा है, उसी पल वह आपकी हो चुकी है। आपको पूरी और पक्की आस्था रखनी है। अगर आप कैटेलाॅग से किसी चीज़ का ऑर्डर दे देते हैं, तो इसके बाद आप तसल्ली से बैठ जाते हैं और जिंदगी में आगे बढ़ जाते हैं, क्योंकि आप जानते हैं कि आपने जिस चीज़ का ऑर्डर दिया है, वह आपको मिल ही जाएगी।

“चीज़ों को इस तरह देखें, जैसे आपकी मनचाही चीज़ें इसी वक्त आपको मिल चुकी हैं। विश्वास रखें कि वे चीज़ें जरूरत के वक्त आपके पास जाएँगी। बस उन्हें आने दें। उनके बारे में चिंता न करें या परेशान न हों। उनकी कभी के बारे में न सोचें। उनके बारे में इस तरह सोचें, जैसे वे आपकी हो चुकी हैं, आप उनके हकदार हैं और मालिक हैं।”

रॉबर्ट कॉलियर (1885-1950)

जिस पल आप माँगते हैं, अदृश्य शक्तियों में यकीन करते हैं और यह महसूस करते हैं कि आपकी मनचाही चीज़ पहले से ही आपके पास है, उसी पल पूरा ब्रह्मांड सक्रिय होकर आपकी कल्पना को साकार करने में जुट जाता है। आपको इस तरह काम करना, बोलना और सोचना है, जैसे आप इसे अभी हासिल कर रहे हों। क्यों? क्योंकि ब्रह्मांड एक आईना है और आकर्षण का नियम आपके प्रबल विचारों को साकार करने आप तक पहुँचाता है। तो क्या इसमें समझदारी नहीं है कि आप उसे खुद को पाता देखें। अगर आप सोचेंगे कि वह चीज़ आपको अब तक नहीं मिली है, तो आप उस चीज़ के न मिलने को आकर्षित कर

लेंगे। इसलिए आपको यकीन करना होगा कि आप उसे हासिल कर चुके हैं। आपको यकीन करना होगा कि वह चीज़ आपको मिल चुकी है। अगर आप उन चीज़ों की तस्वीरों को अपने जीवन में साकार करना चाहते हैं। अगर आप उन चीज़ों की तस्वीरों को अपने जीवन में साकार करना चाहते हैं, तो आपको उन्हें पाने की भावना की फ्रीक्वेंसी ब्रह्मांड को भेजनी होगी। ऐसा करने पर आप तमाम परिस्थितियों, लोगों और घटनाओं को जबर्दस्त तरीके से प्रेरित कर देते हैं, जिससे आपको अपनी मनचाही चीज़ मिल जाए।

जब आप वैकेशन की बुकिंग करते हैं, नई कार का ऑर्डर देते हैं या मकान खरीदते हैं, तो आप जानते हैं कि वे चीज़ें आपकी हो चुकी हैं। आप जाकर उसी अवधि के लिए एक और वैकेशन की बुकिंग नहीं करते हैं या एक और कार या मकान नहीं खरीदते हैं। अगर आप लॉटरी जीत जाते हैं या आपका विरासत में ढेर सारी दौलत मिलती है, तो भौतिक रूप में सचमुच पैसा मिलने से पहले ही आप उसे अपना माल लेते हैं। इसे ही यकीन करने की भावना कहते हैं। यकीन करें कि वह चीज़ आपकी हो चुकी है, आपको मिल चुकी है। प्रबल भावना से उन चीज़ों पर दावा करें, जिन्हें आप चाहते हैं और यकीन करें कि वे आपकी हो चुकी हैं। जब आप ऐसा करेंगे, तो आकर्षण का नियम प्रबलता से सारी परिस्थितियों, लोगों और घटनाओं को प्रेरित कर देगा, ताकि आपको अपनी मनचाही चीज़ हासिल हो जाए।

आप यकीन करने के बिंदु तक किस तरह पहुँच सकते हैं? यकीन करने का नाटक करें। बच्चों की तरह नाटक करें। इस तरह नाटक करें, जैसे वह चीज़ पहले से ही आपके पास हो। जब आप लगातार नाटक करते रहेंगे, तो धीरे-धीरे आप इस बात पर यकीन करने लगेंगे कि वह चीज़ आपको मिल चुकी हैं। जिन्न सिर्फ आपके माँगते समय ही प्रबल विचारों पर प्रतिक्रिया नहीं करता है। जिन्न तो हर समय आपके प्रबल विचारों पर प्रतिक्रिया करता है। इसीलिए माँगने के बाद भी आपको यकीन रखने की जरूरत होती है। आस्था रखें। आपको वह चीज़ मिल चुकी है, इस बारे में आपका अटल विश्वास, आपकी अडिग आस्था आपकी सबसे बड़ी शक्ति है। जब आप यकीन करते हैं कि वह चीज़ आपको मिल रही है, तो जादू देखने के लिए तैयार हो जाएँ।

“आप जो चाहे पा सकते हैं – बशर्ते आप उसे अपने विचारों के साँचे में ढालने का तरीका जानते हों। ऐसा कोई सपना नहीं है जो साकार न हो सके, बशर्ते आप अपने माध्यम से काम कर रही रचनात्मक शक्ति का प्रयोग करना सीख लें। जो तरीके एक व्यक्ति के लिए काम करते हैं, वे सबके लिए काम करेंगे। आपके पास जो है, उसके प्रयोग में ही शक्ति की कुंजी है। इस तरह आप अपने पाने के द्वार को ज्यादा खोल लेते हैं, ताकि आपके माध्यम से ज्यादा रचनात्मक शक्ति प्रवाहित हो सके।”

रॉबर्ट कॉलियर

डॉ. जो विटाल

ब्रह्मांड आपकी मनचाही चीज़ आप तक पहुँचाने के लिए खुद को दोबारा व्यवस्थित करने लगेगा।

जैक कैनफील्ड

हममें से ज्यादातर लोगों ने कभी खुद को वह चाहने की अनुमति ही नहीं दी है, जो हम सचमुच चाहते हैं, क्योंकि हम यह नहीं समझ पाते हैं कि वह चीज़ कैसे प्रकट होगी।

बॉब प्रॉक्टर

अगर आप बस थोड़ा शोध करें, तो आपके सामने यह स्पष्ट हो जाएगा कि जिस भी इंसान ने आज तक जो भी चीज़ हासिल की है, उसे यह मालूम ही नहीं था कि वह इसे कैसे हासिल करने वाला है। वह तो बस इतना जानता था कि वह इसे हासिल करने वाला है।

डॉ. जो विटाल

आपको यह जानने की जरूरत नहीं है कि यह कैसे होगा। आपको यह जानने की भी जरूरत नहीं है कि ब्रह्मांड खुद

को दोबारा व्यवस्थित कैसे करेगा।

यह कैसे होगा या ब्रह्मांड उस चीज को आप तक कैसे पहुँचाएगा, यह चिन्ता करना आपका काम नहीं है। यह तो ब्रह्मांड का काम है। उसे अपना काम करने दें। जब आप यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि यह काम कैसे होगा, तो आपके द्वारा भेजी जाने वाली फ्रीक्वेंसी में आस्था का अभाव होता है। इससे लगता है कि आपको यह यकीन नहीं है कि वह चीज़ पहले से ही आपके पास मौजूद है। आपको लगता है कि यह काम भी आपको ही करना है और आपको इस बात पर यकीन नहीं है कि ब्रह्मांड उस काम को आपके के लिए अपने आप करे देगा। रचनात्मक प्रक्रिया में कैसे के बारे में सोचना आपका काम नहीं है।

बॉब प्रॉक्टर

काम कैसे होगा, आप यह बात नहीं जानते हैं। यह तो आपको बाद में पता चलेगा। तरीका अपने आप आपकी ओर आकर्षित होगा।

लीसा निकोल्स

जब हमें माँगी हुई चीज़ें नजर नहीं आती हैं, तो ज्यादातर मामलों में हम कुंठित हो जाते हैं। हम निराश हो जाते हैं। हम शंका करने लगते हैं। शंका से निराशा की भावना आती है। इसलिए शंका को विश्वास में बदल लें। शंका की भावना को पहचानें और उसकी जगह पर अटल आस्था की भावना रख दें। “मैं जानता हूँ कि वह चीज़ मेरी ओर आ रही है और रास्ते में है।”

कदम 3 : पाएँ

लीसा निकोल्स

प्रक्रिया का तीसरा और आखिरी कदम है पाना। इसके बारे में अच्छी भावनाएँ महसूस करें। उसी तरह महसूस करें, जिस तरह आप उस चीज़ को पाने के बाद महसूस करेंगे। इसे अभी महसूस करें।

मार्सी शिमॉफ

इस प्रक्रिया में अच्छा महसूस करना और खुश रहना महत्वपूर्ण है, क्योंकि अच्छा महसूस करते समय आप खुद को उसी फ्रीक्वेंसी पर रख रहे हैं, जिस पर आपकी मनचाही चीज़ है।

माइकल बर्नार्ड बेकविथ

यह ब्रह्मांड भावनाओं से संचालित है। अगर आप सिर्फ बौद्धिक दृष्टि से किसी चीज़ में यकीन करते हैं, लेकिन आपके मन में उसके अनुरूप भावना नहीं है, तो हो सकता है कि आपके आग्रह में इतनी शक्ति न हो कि आप अपनी मनचाही चीज़ को अपने जीवन में साकार कर सकें। आपको इसे महसूस करना होता है।

एक बार माँगे। फिर यकीन करें कि आप उसे पा चुके हैं। और फिर अच्छा महसूस करके उसे पा लें। जब आप अच्छा महसूस करते हैं, तो आप पाने की फ्रीक्वेंसी पर हैं। आप सारी अच्छी चीज़ों को अपनी ओर लाने की फ्रीक्वेंसी पर हैं और आपको माँगी हुई चीज़ मिल जाएगी। जाहिर है, आप सिर्फ वही चीज़ माँगे, जिसके मिलने पर आपको अच्छा महसूस हो, है ना? इसलिए अगर आप खुद को अच्छा महसूस करने की फ्रीक्वेंसी पर ले आते हैं, तो आप उसे पा लेंगे।

खुद को उस फ्रीक्वेंसी तक पहुँचाने का एक तेज तरीका यह कहना है, “मैं इसे अभी पा रहा हूँ। मुझे अपने जीवन में तमाम अच्छी चीज़ें इसी समय मिल रही हैं। मैं (यहाँ अपनी इच्छा भर लें) इसी समय पा रहा हूँ।” और मिलने की भावना को सचमुच महसूस करें। इस तरह महसूस करें, जैसे आपने उस चीज़ को वाकई पा लिया हो।

मेरी एक प्रिय मित्र मार्सी में जबर्दस्त कल्पनाशीलता है। वह हर चीज़ महसूस करती है। वह महसूस करती है कि मनचाही और माँगी हुई चीज़ मिलने पर उसे कैसा महसूस होगा। वह हर चीज़ को सचमुच महसूस करती है। वह इस मामले में नहीं उलझती है कि वह चीज़ उसे कैसे, कब या कहाँ मिलेगी। वह तो बस उसे महसूस करती है और फिर वह चीज़ प्रकट हो जाती है।

तो इसी समय अच्छा महसूस करें।

बॉब प्रॉक्टर

जब आप किसी कल्पना को हकीकत में बदल लेते हैं, तो आप ज्यादा बड़ी कल्पनाएँ करने की स्थिति में आ जाते हैं

और यही रचनात्मक प्रक्रिया है।

“आप प्रार्थना में जो भी माँगे, यकीन करने पर उसे पा लेंगे।”

मैथ्यू 21 : 22

“जिन भी चीज़ों की आप इच्छा करते हैं, जब आप प्रार्थना करते हैं और यकीन करते हैं कि आप उन्हें पा लेंगे, तो आप उन्हें सचमुच पा लेंगे।”

मार्क 21 : 22

बॉब डॉयल

आकर्षण का नियम, इसका अध्ययन और अभ्यास बस यह अनुमान लगाना है कि इसी समय अपनी मनचाही चीज़ पाने की भावनाएँ उत्पन्न करने का सबसे अच्छा तरीका कौन सा है। अपनी मनचाही कार में टेस्ट ड्राइव पर जाएँ। अपने मनचाहे मकान की शॉपिंग पर जाएँ। अपने मनचाहे मकान के भीतर जाएँ। इसी समय मनचाही चीज़ का मालिक बनने की भावनाएँ उत्पन्न करने के लिए आपको जो भी करना पड़े, करें और अपनी भावनाओं को याद रखें। इतना सब करने से आपको अपनी मनचाही चीज़ सचमुच पाने में मदद मिलेगी।

जब आप ऐसा महसूस करते हैं, जैसे मनचाही चीज़ आपको मिल चुकी है और यह भावना इतनी सच्ची होती है, जैसे वह आपके पास मौजूद है, तो इसका मतलब यह है कि आपको यकीन हो गया है कि आप उसे पा चुके हैं। और फिर आप उसे पा लेंगे।

बॉब डॉयल

हो सकता है कि आप जागने पर उस चीज़ को मौजूद देखें। यह सचमुच साकार हो चुकी है। यह फिर, आपको अचानक कोई काम करने की प्रेरणा मिल जाए। आपको निश्चित रूप से यह नहीं कहना चाहिए, “देखिए, मैं इसे इस तरह से कर सकता हूँ, लेकिन यह मुझे पसंद नहीं है।” अगर स्थिति यह है, तो आप सही रास्ते पर नहीं हैं। कई बार कर्म करने की जरूरत भी होगी, लेकिन अगर आप इसे उसी तरीके से कर रहे हैं, जिस तरीके से ब्रह्मांड इसे आप तक पहुँचाने की कोशिश कर रहा है, तो आप खुशी की भावनाएँ महसूस करेंगे। आप उत्साहित महसूस करेंगे। समय जैसे ठहर जाएगा। आप उस काम को बिना थके दिन भर कर सकते हैं।

कर्म का मतलब कई लोगों के लिए “काम” हो सकता है, लेकिन प्रेरित कर्म काम जैसा बिलकुल महसूस नहीं होगा। प्रेरित कर्म और काम के बीच फर्क यह है : प्रेरित कर्म वह है, जब आप पाने के लिए काम कर रहे हैं। अगर आप उस चीज़ को साकार करवाने के लिए काम कर रहे हैं, तो आप पीछे फिसल गए हैं। प्रेरित कर्म प्रयासहित होता है और इससे अद्भुत महसूस होता है, क्योंकि आप पाने की फ्रीक्वेंसी पर होते हैं।

कल्पना करें कि जिंदगी तेजी से बहती नदी है। किसी चीज़ साकार करवाने के लिए काम करते समय ऐसा महसूस होगा, जैसे आप नदी के बहाव के खिलाफ तैर रहे हैं। यह मुश्किल होगा और संघर्ष जैसा लगेगा। दूसरी तरफ, ब्रह्मांड से पाने के लिए कर्म करते समय आपको ऐसा महसूस होगा, जैसे आप नदी के बहाव के साथ बह रहे हैं। यह प्रयासहित महसूस होगा। यह प्रेरित कर्म है और ब्रह्मांड तथा जिंदगी के बहाव के साथ तैरने की भावना है।

कई बार तो किसी चीज़ को पाने तक आपको पता भी नहीं चलेगा कि आपने “कर्म” किया था, क्योंकि कर्म करते समय आपको बहुत अच्छा महसूस हो रहा था। तब आप पलटकर देखेंगे और इस बात पर हैरान होंगे कि किस तरह ब्रह्मांड आपको वहाँ तक ले गया, जहाँ आप जाना चाहते थे, और उस चीज़ को आपके पास ले आया, जिसे आप पाना चाहते थे।

डॉ. जो विटाल

ब्रह्मांड तीव्र गति को पसंद करता है। विलंब न करें। दोबारा न सोचें। शंका न करें। जब अवसर मौजूद हो, जब आवेग मौजूद हो, जब अंदर से सहज बोध की प्रेरणा का इशारा हो, तो तत्काल कर्म कर दें। यह आपका काम है। और आपको बस इतना ही करना है।

अपनी सहज भावनाओं (instincts) पर भरोसा करें। यह ब्रह्मांड का इशारा है, जो आपको प्रेरित कर रहा है। यह

ब्रह्मांड का इशारा है, जो पाने की फ्रीक्वेंसी पर आपके साथ संप्रेषण कर रहा है। अगर आपके मन में सहज भावना है, तो उसका अनुसरण करें। आप पाएँगे कि ब्रह्मांड चुंबक की तरह आपको माँगी हुई चीज़ की ओर ले जा रहा है।

बॉब प्रॉक्टर

आप अपनी जरूरत की हर चीज़ की आकर्षित कर लेंगे। अगर आपको पैसे की जरूरत है, तो आप उसे आकर्षित करेंगे। अगर आपको दोस्तों की जरूरत है, तो आप उन्हें आकर्षित करेंगे। अगर आपको किसी खास पुस्तक की जरूरत है, तो आप उसे आकर्षित करेंगे। बहरहाल, आपको इस तरफ ध्यान देना होगा कि आप कैसे आकर्षित करना चाहते हैं, क्योंकि जब आप अपनी मनचाही चीज़ की तस्वीरें अपने दिमाग में रखते हैं, तो आप उन चीज़ों के प्रति ओर वे आपकी ओर आकर्षित होंगी। वे चीज़ें सचमुच आपके माध्यम से साकार हो जाती हैं और वास्तविकता में बदल जाती हैं। और ऐसा आकर्षण नियम के कारण होता है।

याद रखें कि आप एक चुंबक है और हर चीज़ को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। जब आप स्पष्टता से सोच लेते हैं कि आप क्या चाहते हैं, तो आप उन चीज़ों को अपनी ओर खींचने वाले चुंबक बन जाते हैं। आप जिन चीज़ों को चाहते हैं, वे आपकी ओर चुंबकीय आकर्षण से खिंची चली आएँगी। आप जितना ज्यादा अभ्यास करेंगे और आकर्षण के नियम को अपनी ओर जितनी ज्यादा चीज़ें लाते देखेंगे, आप उतने ही ज्यादा बड़े चुंबक बन जाएँगे, क्योंकि आपने आस्था, विश्वास और ज्ञान की शक्ति का प्रयोग किया है।

माइकल बर्नार्ड बेकविथ

आप शून्य से शुरू कर सकते हैं, क्योंकि शून्य से, बिना राह वाली जगह पर एक राह बना दी जाएगी। आपको सिर्फ मनचाही चीज़ों की साकार कल्पना करने की क्षमता की जरूरत है। मानव जाति के इतिहास में आज तक जो भी चीज़ खोजी और बनाई गई है, वह एक विचार से शुरू हुई थी। उस एक विचार से एक रहा बनी और वह चीज़ अदृश्य से दृश्य में प्रकट हो गई।

जैक कैनफील्ड

इस तरह सोचें कि आप रात में कार चला रहे हैं। हेडलाइट्स की रोशनी सिर्फ सौ से दो सौ फुट आगे तक जाती है। आप कैलिफोर्निया से न्यूयॉर्क तक पूरे रास्ते अंधेरे में कार चला सकते हैं, क्योंकि आपको बस अगले दो सौ फुट तक ही देखना होता है। जिंदगी भी हमारे सामने इसी तरह प्रकट होती है। अगर हम बस इतना भरोसा कर सकें कि उसके बाद अगले दो सौ फुट प्रकट होंगे और उसके बाद अगले दो सौ फुट, तो इस तरह आपकी जिंदगी प्रकट होती रहेगी और यह अंततः आपको मनचाही चीज़ की दिशा में ले जाएगी, क्योंकि आप उसे सचमुच पाना चाहते हैं।

ब्रह्मांड पर भरोसा रखें। भरोसा रखें, यकीन रखें, आस्था रखें। मुझे सचमुच जरा भी अंदाजा नहीं था कि मैं रहस्य के ज्ञान को फिल्म के पर्दे पर कैसे उतार पाऊँगी। मैंने बस भविष्य-दृष्टि का परिणाम देखा, मैंने अपने मस्तिष्क में परिणाम को स्पष्टता से देखा, मैंने इसे पूरी शक्ति से महसूस किया और द सीक्रेट को बनाने में हमें जिस चीज़ की जरूरत थी, वह हर चीज़ हमारे पास आ गई।

“आस्था से पहला कदम उठाएँ। आपको पूरी सीढ़ी देखने की जरूरत नहीं है। बस पहला कदम उठा लें।”

डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर (1929—1968)

रहस्य और आपका शरीर

आइए, अब हम रचनात्मक प्रक्रिया का इस्तेमाल उन लोगों के लाभ के लिए करते हैं, जो यह महसूस करते हैं कि उनका वजन ज्यादा है और जो अपना वजन कम करना चाहते हैं।

पहली बात तो यह जान लें कि अगर आप वजन कम करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे, तो आपका वजन कम नहीं हो पाएगा, क्योंकि आप हमेशा ही वजन कम करने के विचार को अपनी ओर आकर्षित करेंगे। इसलिए “वजन कम करने” के ख्याल को अपने दिमाग से निकाल दें। इसी कारण डाइटिंग सफल नहीं होती है। चूँकि आप

वजन कम करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, इसलिए आप लगातार वजन कम करने की ओर आकर्षित होते हैं।

दूसरी बात यह जानना है कि ज्यादा वजन की स्थिति इसके बारे में विचार करने के कारण उत्पन्न हुई। सबसे मूलभूत शब्दावली में, अगर किसी का वजन ज्यादा है, तो यह "मोटे विचार" सोचने से हुआ है, चाहे उस व्यक्ति को इस बात का एहसास हो या न हो। "दुबले विचार" सोचकर कोई मोटा नहीं हो सकता। यह आकर्षण के नियम की सरासर अवहेलना होगी।

भले ही लोगों को यह बताया गया हो कि उनकी थॉयराइड ग्रंथि धीमी गति से काम करती है, उनका चयापचय (metabolism) धीमा है या उनका मोटापा आनुवंशिक है, लेकिन ये सभी चीजें "मोटे विचार" सोचने के बहाने हैं। अगर आप इनमें से किसी भी स्थिति को खुद पर लागू करते हैं और इस पर यकीन करते हैं, तो यह आपका अनुभव बन जाएगा और आप ज्यादा वजन को अपनी ओर आकर्षित करते रहेंगे।

दो बेटियाँ होने के बाद मेरा वजन बढ़ गया। मैं जानती हूँ कि ऐसा उन संदेशों को सुनने और पढ़ने के कारण हुआ था, जिनके अनुसार एक बच्चा पैदा होने के बाद वजन कम करना मुश्किल होता है और दूसरे बच्चे के बाद तो और भी ज्यादा मुश्किल होता है। मैंने "मोटे विचारों" का आह्वान किया और यह मेरा अनुभव बन गया। मैं सचमुच "मुटिया" गई और मैंने अपने "मोटापे" की तरफ जितना ज्यादा ध्यान दिया, उतने ही ज्यादा "मोटापे" को अपनी ओर आकर्षित करने लगी। नाटी होने के बावजूद मेरा वजन 143 पाँड हो गया, सिर्फ इसलिए क्योंकि मेरे मन में "मोटे विचार" थे।

आम लोगों की तरह ही मैं भी सोचती थी कि मेरा वजन भोजन के कारण बढ़ा है। इस धारणा से आपको कोई लाभ नहीं होता है और अब मैं इसे कोरी बकवास मानती हूँ। भोजन के कारण वजन नहीं बढ़ता है। अगर भोजन आपका वजन बढ़ाता है, तो ऐसा आपके इस विचार के कारण होता है कि भोजन से वजन बढ़ता है। याद रखें, विचार ही हर चीज़ का मूल कारण है और बाकी चीज़ें उन विचारों का परिणाम हैं। आदर्श विचार सोचेंगे, तो वजन भी आदर्श होगा।

सभी सीमित करने वाले विचारों को दिमाग से निकाल दें। भोजन आपका वजन तब तक नहीं बढ़ा सकता, जब तक आप यह न सोच लें कि यह ऐसा कर सकता है।

आदर्श वजन की परिभाषा वह वजन है, जो आपको अच्छा महसूस हो। किसी दूसरे की राय महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण तो वह आदर्श वजन है, जिसमें आप अच्छा महसूस करते हैं।

इस बात की बहुत संभावना है कि आप किसी ऐसे दुबले व्यक्ति को जानते होंगे, जो घोड़े की तरह ठूँस-ठूँसकर खाने के बाद गर्व से घोषणा करता होगा, "मैं जितना चाहे खा सकता हूँ, लेकिन मेरा वजन हमेशा आदर्श रहता है।" और ब्रह्मांड का जिन कहता है, "आपकी इच्छा ही मेरा आदेश है।"

रचनात्मक प्रक्रिया का प्रयोग करके अपने आदर्श वजन और शरीर को आकर्षित करने के लिए इन कदमों का अनुसरण करें:

कदम 1 : माँगें

उस वजन के बारे में स्पष्टता से सोचें, जो आप पाना चाहते हैं। अपने दिमाग में स्पष्ट तस्वीर रखें के आदर्श वजन होने के बाद आप कैसे दिखेंगे। अपने आदर्श वजन की तस्वीरें सामने रखें और उनकी ओर अक्सर देखें। अगर आपके पास अपनी खुद की तस्वीरें न हों, तो मनचाहे शरीर की दूसरों की तस्वीरें अक्सर देखें।

कदम 2 : यकीन करें

आपको यकीन करना होगा कि आपको मिलेगा। आपको विश्वास करना होगा कि आपका वजन आदर्श हो चुका है। आपको इस तरह कल्पना करनी होगी, नाटक करना होगा, अभिनय करना होगा, जैसे आपका वजन आदर्श हो चुका है। आपको खुद को आदर्श वजन पाते हुए देखना होगा।

अपना मनचाहा वजन लिखकर अपनी वजन तौलने की मशीन के रीडआउट पर रख दें या खुद का वजन ही न

लें। अपने अपने विचारों, शब्दों और कार्यों में जो माँगा है, उस बात को न काटें। अपने वर्तमान वजन के हिसाब से कपड़े न खरीदें। आस्था रखें और उन कपड़ों पर ध्यान केंद्रित करें, जिन्हें आप भविष्य में खरीदेंगे। आदर्श वजन को आकर्षित करना ब्रह्मांड के कैटेलॉग में से ऑर्डर देने जैसा ही है। आप कैटेलॉग में देखते हैं, आदर्श वजन चुनते हैं, अपना ऑर्डर देते हैं और आपका ऑर्डर किया हुआ वजन आप तक पहुँच दिया जाता है।

अपने आदर्श वजन वाले लोगों की तलाश करें, उनकी प्रशंसा करें और मन ही मन उनकी तारीफ करने का निश्चय करें। जब आप उनकी प्रशंसा करें हैं और उस भावना को महसूस करते हैं – तो आप उस आदर्श वजन का आह्वान कर रहे हैं। अगर ज्यादा वजन वाले लोग नजर आएँ, तो उन पर ध्यान न दें, बल्कि तत्काल अपना ध्यान मोड़कर अपने आदर्श शरीर वाली तस्वीर पर ले जाएँ और उसे महसूस करें।

कदम 3 : पाएँ

आपको अच्छा महसूस करना चाहिए। आपको अपने बारे में अच्छा महसूस करना चाहिए। यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि अगर आप इस वक्त अपने शरीर के बारे में बुरा महसूस करते हैं, तो फिर आप आदर्श वजन को आकर्षित नहीं कर सकते। अगर आप अपने शरीर के बारे में बुरा महसूस करते हैं तो यह एक सशक्त भाव है और आप अपने शरीर के बारे में बुरे भावों को आकर्षित करते रहेंगे। अगर आप अपने शरीर की आलोचना करेंगे और इसमें कमियाँ खोजते रहेंगे, तो आप इसे कभी नहीं बदल पाएँगे। सच तो यह है कि इससे आप ज्यादा वजन को अपनी ओर आकर्षित करेंगे। अपने शरीर के रोम-रोम की तारीफ करें और ईश्वर को धन्यवाद दें। अपने बारे में सभी आदर्श बातें सोचें। जब आप अपने बारे में आदर्श विचार सोचते हैं और अच्छा महसूस करते हैं, तो आप अपने आदर्श वजन की फ्रीक्वेंसी पर हैं और आदर्श वजन का आह्वान कर रहे हैं।

वैलेस वेटल्स अपनी एक पुस्तक में खाने के बारे में एक अद्भुत सलाह देते हैं। वे सलाह देते हैं कि खाना खाते समय चबाने के अनुभव पर पूरा ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अपने मस्तिष्क को उस पर केंद्रित करें और खाना खाने की अनुभूति को महसूस करें। अपने दिमाग को दूसरी बातों की तरफ न भटकने दें। अपने शरीर पर ध्यान केंद्रित करें और अपने मुँह में भोजन चबाने की अनुभूतियों का आनंद लें। अगली बार खाना खाते समय इसे आजमाकर देखें। खाना खाते समय जब आपका पूरा ध्यान इस तरह केंद्रित होता है, तो उसका स्वाद बहुत बढ़िया और जायकेदार होता है। ध्यान भटकने पर स्वाद लगभग गायब हो जाता है। मुझे यकीन है कि अगर हम अपने भोजन को पूरे ध्यान से खाएँ, उसके आनंददायक अनुभव पर पूरा ध्यान केंद्रित करें, तो भोजन हमारे शरीर में आदर्श रूप से पच जाता है और परिणाम स्वरूप हमें आदर्श वजन मिल जाता है।

वजन की मेरी अपनी कहानी का अंत यह है कि अब मेरा वजन 116 पाँड है, जो मेरे हिसाब से आदर्श है और मैं जो चाहे खा सकती हूँ। मूल बात यह है कि अपने आदर्श वजन पर ध्यान केंद्रित करें।

इसमें कितना समय लगता है?

डॉ. जो विटाल

लोग एक और सवाल पूछते हैं, "उस कार, व्यक्ति, पैसे के प्रकट होने में कितना समय लगेगा?" मेरे पास कोई नियम पुस्तिका नहीं है, जिसमें लिखा हो कि इसमें तीस मिनट या तीन दिन या तीस दिन लगेंगे। यह तो आपके और ब्रह्मांड के एक साथ जुड़ने का मामला है।

समय एक भ्रम है। आइंस्टीन ने हमें यह बात बताई है। अगर आपने यह बात पहली बार सुनी हो, तो शायद आपको यह अवधारणा समझना मुश्किल लगे, क्योंकि आप हर चीज़ को एक के बाद एक होते देखते हैं। क्वांटम भौतिकशास्त्री और आइंस्टीन हमें बताते हैं कि हर चीज़ एक साथ हो रही है। अगर आप समझ सकें कि समय का अस्तित्व ही नहीं है और इस अवधारणा को स्वीकार कर सकें, तो आप देखेंगे कि आप भविष्य में जो चाहते हैं, वह पहले से ही मौजूद हैं। अगर रह चीज़ एक ही समय हो

रही है, तो आप जो चीज़ चाहते हैं, उसके साथ आपका दूसरा संस्करण पहले से ही मौजूद है।

ब्रह्मांड को आपकी मनचाही चीज़ प्रकट करने में जरा भी समय नहीं लगता है। जो भी देर होती है, आपकी तरफ से होती है। आप यकीन करने, जानने और महसूस करने की उस जगह तक देर से पहुँचते हैं, जहाँ आपको यह एहसास होता है कि वह चीज़ आपके पास पहले से ही मौजूद है। आप अपनी मनचाही चीज़ की फ्रीक्वेंसी तक पहुँचने में समय लगा देते हैं। जब आप उस फ्रीक्वेंसी पर पहुँच जाते हैं, तो आपकी मनचाही चीज़ प्रकट हो जाती है।

बॉब डॉयल

आकार ब्रह्मांड के लिए कुछ नहीं हैं। वैज्ञानिक स्तर पर किसी बड़ी चीज़ को आकर्षित करना बहुत छोटी चीज़ के मुकाबले ज्यादा मुश्किल नहीं होता है।

ब्रह्मांड हर चीज़ बिना कोशिश के करता है। घास उगते समय तनाव में नहीं आती है। यह प्रयासहीन होता है। यही तो महान योजना है।

सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि आपके दिमाग में क्या चल रहा है। सब कुछ इस पर निर्भर करता है कि हम अपने दिमाग में क्या रखते हैं। हम अक्सर यह कहते हैं, "यह बड़ी चीज़ है, इसमें थोड़ा समय लगेगा।" और "यह छोटी चीज़ है। इसके लिए एक घंटे का समय काफी है।" ये हमारे नियम हैं, जिन्हें हम परिभाषित करते हैं। ब्रह्मांड में देरी का कोई नियम नहीं है। आप मनचाही चीज़ इसी समय पाने की भावनाएँ ले आएँ: ब्रह्मांड फौरन प्रतिक्रिया करेगा – चाहे वह चीज़ जो भी हो।

ब्रह्मांड के लिए समय या आकार का कोई महत्व नहीं होता है। एक डॉलर को प्रकट करना भी इसके लिए उतना ही आसान है, जितना कि दस लाख डॉलर को। प्रक्रिया वही है। एक चीज़ ज्यादा जल्दी आती है और दूसरी को आने में ज्यादा देर लगती है, इसका इकलौता कारण आपकी यह सोच थी कि दस लाख डॉलर बहुत बड़ी रकम होती है और एक डॉलर बहुत छोटी राशि है।

बॉब डॉयल

कुछ लोगों को छोटी चीज़ों में ज्यादा आसानी होती है, इसलिए हम कई बार कहते हैं, छोटी चीज़ों से शुरू करें, जैसे एक कप कॉफी से। आज एक कप कॉफी से। आज एक कप कॉफी आकर्षित करने की भावना रखें।

बॉब प्रॉक्टर

किसी पुराने दोस्त से बात करने की तस्वीर अपने दिमाग में रखें, जिसे आपने लंबे समय से न देखा हो। किसी न किसी तरह कोई आपसे उसके बारे में बात करने लगेगा, वह दोस्त आपको फोन करेगा या आपको उसकी चिट्ठी मिलेगी।

किसी छोटी चीज़ से शुरू करना अपनी आँखों से आकर्षण के नियम की सटीकता देखने का आसान तरीका है। मैं आपको एक युवक की कहानी बताती हूँ, जिसने ठीक यही किया था। उसने द सीक्रेट फिल्म देखी और किसी छोटी चीज़ से शुरू करने का फैसला किया।

उसने अपने दिमाग में एक पंख की तस्वीर बनाई और यह सुनिश्चित किया कि वह पंख अनूठा हो। उसने उस पंख पर कुछ खास निशानों की कल्पना भी की, ताकि उस पंख के दिखते ही वह बिना किसी शंका के जान जाए कि वह आकर्षण के नियम के कारण ही उस तक पहुँचा है।

दो दिन बाद वह न्यूयॉर्क सिटी में एक ऊँची इमारत में पैदल जा रहा था। उसने कहा कि अंदर घुसते समय उसने यूँ ही नीचे देखा। वहाँ उसके कदमों के पास वह पंख पड़ा था। न्यूयॉर्क सिटी में ऊँची इमारत के गेट पर पंख। वह भी कोई ऐसा-वैसा पंख नहीं, बल्कि ठीक वही पंख, जिसकी उसने कल्पना की थी। यह उनकी कल्पना की तस्वीर के ठीक अनुरूप था और इस पर उसके सारे निशान मौजूद थे। उस पल वह बिना किसी शंका के जान गया कि आकर्षण का नियम सचमुच प्रबलता और सटीकता से काम करता है। उसे अपनी आश्चर्यजनक क्षमता और शक्ति का एहसास हो गया कि वह अपने मस्तिष्क की शक्ति से किसी भी चीज़ को अपनी ओर आकर्षित कर सकता है। पूरे विश्वास के साथ अब वह ज्यादा बड़ी चीज़ें पाने की ओर बढ़ गया है।

डेविस स्कर्मर

निवेश प्रशिक्षक, उपदेशक और धन विशेषज्ञ

लोग इस बात पर हैरान होते हैं कि मुझे पार्किंग की जगह क्यों मिल जाती है। रहस्य समझने के बाद से मेरे साथ ऐसा लगातार हो रहा है। मैं पार्किंग की अपनी मनचाही जगह की कल्पना करता हूँ और 95 प्रतिशत मौकों पर वह जगह मुझे खाली मिलती है और मैं सीधे अपनी कार अंदर ले जाकर खड़ी कर देता हूँ। पाँच प्रतिशत मौकों पर मुझे एक-दो मिनट इंतजार करना होता है और फिर वहाँ की कार बाहर निकल जाती है तथा मैं अपनी कार खड़ी कर देता हूँ। ऐसा हर बार होता है।

अब आप समझ सकते हैं कि "मुझे पार्किंग की जगह हमेशा मिल जाती है।" कहने वाले व्यक्ति को हर बार पार्किंग की जगह क्यों मिल जाती है। या "मैं सचमुच खुशकिस्मत हूँ, मैं हर समय जीतता हूँ," कहने वाला व्यक्ति एक के बाद एक जीत हासिल करता चला जाता है, हमेशा। ये लोग इसकी उम्मीद करते हैं। महान चीजों की उम्मीद करें। ऐसा करने पर आप अपने जीवन का निर्माण खुद करेंगे।

अपने दिन की योजना पहले से बनाएँ

आकर्षण के नियम का प्रयोग करके आप अपने पूरे जीवन की योजना पहले से ही बना सकते हैं, उस अगले काम की भी, जो आप आज करने वाले हैं। प्रेंटिस मलफोर्ड ऐसे शिक्षक हैं, जिनके लेखन में आकर्षण के नियम और इसके प्रयोग के बारे में बहुत ज्ञान भरा है। उन्होंने दर्शाया है कि अपने दिन के बारे में पहले से सोचना इतना महत्वपूर्ण क्यों है।

"जब आप खुद से कहते हैं, 'मेरी यात्रा सुखद होगी, तो आप दरअसल जाने से पहले ऐसी शक्तियाँ और तत्व भेज रहे हैं, जो स्थितियों को इस तरह व्यवस्थित कर देंगे, ताकि आपकी यात्रा सुखद हो जाए। जब यात्रा या शॉपिंग करने जाने से पहले आप बुरे मूड में होते हैं या डरे होते हैं, या किसी अप्रिय घटना के प्रति आशंकित होते हैं, तो आप अदृश्य प्रतिनिधियों को अपने आगे भेज रहे हैं, जो किसी तरह की अप्रिय स्थिति उत्पन्न कर देंगे। हमारे विचार, या दूसरे शब्दों में, हमारी मानसिक अवस्था हमेशा पहले से ही अच्छी या बुरी चीजों को 'उत्पन्न करने' का काम करती है।"

प्रेंटिस मलफोर्ड

प्रेंटिस मलफोर्ड ने ये शब्द 1870 के दशक में लिखे थे। कितनी क्रांतिकारी सोच थी। आप स्पष्टता से देख सकते हैं कि हर दिन, हर घटना के बारे में पहले से सोचना इतना महत्वपूर्ण क्यों है। बेशक आपको पहले से अपने दिन के बारे में सोचने का विपरीत अनुभव हुआ होगा और उसका परिणाम जल्दबाजी तथा हड़बड़ी है। अगर आप जल्दबाजी और हड़बड़ी में हैं, तो जान लें कि ये विचार और कार्य डर (देर होने के डर) पर आधारित हैं और आप भविष्य में अपने लिए बुरी चीजें "उत्पन्न" कर रहे हैं। जब आप जल्दबाजी जारी रखते हैं, तो आप अपनी राह में एक के बाद दूसरी बुरी चीज को आकर्षित करेंगे। इसके अलावा, आकर्षण का नियम भविष्य में ऐसी परिस्थितियाँ "उत्पन्न" कर देगा, जिनसे आपकी जल्दबाजी तथा हड़बड़ी और ज्यादा बढ़ जाएगी। आपको ठहरकर उस फ्रीक्वेंसी से दूर हटना होगा। अगर आप बुरी चीजों को अपने पास नहीं बुलाना चाहते हैं, तो कुछ पल का समय

निकालें और खुद को बदल लें।

कई लोग, खासकर पाश्चात्य समाज के लोग, "समय" के पीछे भागते हैं और शिकायत करते हैं कि उनके पास पर्याप्त समय नहीं रहता है। देखिए, अगर कोई कहता है कि उसके पास पर्याप्त समय नहीं है, तो ऐसा आकर्षण के नियम के कारण ही होता है। अगर आप पर्याप्त समय न होने के विचारों के साथ गोल-गोल घूम रहे हैं, तो भविष्य में दृढ़ता से घोषणा करें, "मेरे पास पर्याप्त से ज्यादा समय है।" इस तरह आप अपनी जिंदगी बदल लेंगे।

आप इंतजार करने के समय का उपयोग करके उसे सार्थक बना सकते हैं। आप उसे अपने भावी जीवन का निर्माण करने वाले सशक्त समय में बदल सकते हैं। अगली बार जब आप किसी का इंतजार करें, तो उस खाली समय का लाभ उठाकर अपनी सभी मनचाही चीजों को पाने की कल्पना में जुट जाएँ। आप यह काम हर जगह, हर समय कर सकते हैं। जीवन की हर स्थिति को सकारात्मक स्थिति में बदल लें।

जिंदगी की हर घटना के बारे में पहले से सोचें। सोचकर सकारात्मक परिणाम की कल्पना करने की आदत डाल लें। अपने हर काम और अपनी हर यात्रा में ब्रह्मांड की शक्तियों को अपने आगे भेजें। यह सोच लें कि आप कैसा परिणाम चाहते हैं। अगर आप ऐसा कर सकते हैं, तो आप अपनी इच्छा से अपने जीवन का निर्माण कर लेंगे।

साभार :
रहस्य

पेज संख्या 45 से 67 तक
रॉन्डा बर्न

शिल्प और शूद्र वर्ग

दुनिया में जो मानव जीवाश्म मिले हैं, उनमें भारत भी एक है। मायोसीन युग (आरंभ 2 करोड़ 46 लाख वर्ष पूर्व तथा अवधि-1 करोड़ 91 लाख वर्ष) में प्रथम कपि मानव की उत्पत्ति हुई। इसी काल में भारत की धरती पर भी एक प्रजाति आदि कपि मानव की उत्पत्ति हुई। शिवालिक की तलहटी, नीलगिरि की चट्टानों अंडमान, सतपुड़ा, नर्मदा और लोहित के जंगलों व कंदराओं में ये विचरण करते रहे, वही आज के S.C./S.T. (दलित) हैं, कल के शूद्र।

डोनेव प्रथम हिमकाल 16 लाख वर्ष पूर्व आरंभ हुआ था और 230000 वर्षों तक रहा। अंतिम हिमकाल (125000-10,000) तक रहा। इस बीच तमाम उथल-पुथल के बावजूद भी कपि मानव से सभ्य मानव तक संघर्ष करते हुए शूद्र वर्ग अपने अस्तित्व को कायम रखे हुए हैं। शूद्र वर्ग का क्षेत्र विस्तार हिमालय के दक्षिण में स्थित समस्त भारतीय उपमहाद्वीप, श्रीलंका, बर्मा, मलाया, हिंद, चीन, प्रायद्वीप, पूर्वी द्वीप समूह, फिलीपाइंस व दक्षिणी चीन आदि है। इस संपूर्ण क्षेत्र को ओरिएंटल प्रदेश (Region) कहते हैं। यह चार उपप्रदेशों में विभाजित है। इंडियन उप प्रदेश, सीलोनियन उप प्रदेश, इंडो चाइनीज उप प्रदेश एवं इंडो-मलायन उप प्रदेश।

4 लाख वर्ष पूर्व ही मनुष्य मनुष्य बन गया था। वह बंदर नहीं रह गया था, तभी से आवास, भोजन और शिल्पीय संघर्ष लगातार करता आ रहा है। तब जाकर वह आज की स्थिति तक पहुंच पाया है। आदिकपि मानव बंदर की भांति जो अपना जीवन व्यतीत करता आ रहा था, शिल्प विज्ञान के कारण ही उन्नत स्तर तक पहुंच पाया है। बिखरी अनुपयोगी वस्तु को उपयोगी वस्तु बनाने के ज्ञान को शिल्प ज्ञान या प्रौद्योगिकी कहते हैं, जैसे पत्थर को चक्की में विकसित करना शिल्प विज्ञान है। शूद्र वर्ग प्रचीन काल (मायोसीन युग) से ही शिल्पी रहा है।

कृषि प्रौद्योगिकी में शूद्र वर्ग सिद्धहस्त रहा है। कृषि क्षेत्र में उसने कोठरियों का निर्माण किया, सिंचाई के साधनों का विकास किया, खेत जोतने की विधियों में उन्नत विकास किया और आज कीटनाशक औषधियों का भी विकास कर चुका है।

नई प्रौद्योगिकी नई आवश्यकताओं को जन्म देती है एशिया के संपूर्ण क्षेत्रों में निर्धनता-चरमसीमा पर थी,

खनिज पदार्थों की खोज ने व्यापार में वृद्धि की और बहुत हद तक निजात मिली। भारत के गांवों में जहां अत्यधिक निर्धनता व्याप्त थी, वहां संचार माध्यम, यातायात व्यवस्था, कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति ने बहुत हद तक पिछड़ेपन को दूर किया है, शिक्षा के क्षेत्र में शून्य से शिखर तक पहुंचा है।

4 लाख ई. पू. से लेकर 1000 ई. पू. तक
का शूद्रों का प्रौद्योगिकी विवरण

भाग - 21

विश्वपरिदृश्य प्रागैतिहासिक

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक स्थिति
पुरा पाषाण युग

1,50,000 ई. पू. से 4000 ई. पू. तक

↓ ↓

बर्बर युग-जांगल युग

मध्यपाषाणयुग-नवपाषाण युग

दास युग

4000 ई. पू. से 1000 ई. पू. तक

↓ ↓

अर्द्धदास युग

ताम्र पाषाण युग

1000 ई. पू. से 800 ई. पू. तक

↓ ↓

सामंत युग-लौह युग

800 ई. पू. से 1600 ई. तक

(जमीन के) मालिक-मजदूर

कृषक मजदूर युग-शिल्प युग

↓ ↓

पूंजीवादी युग

1600 ई. से आज क्वांटम कंप्यूटर तक

↓ ↓

समाजवादी युग

अक्टूबर 1917 से 1990 ई. तक

दो चार देशों में आकर चला भी गया और

इसी हेतु विश्व भर में संघर्ष जारी है

भारतीय परिदृश्य

प्रागैतिहासिक

भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक,
धार्मिक और नैतिक परिस्थिति

↓ ↓

शूद्र युग-सप्तसैधव युग

सृष्टि के निर्माण 5 अरब वर्ष पूर्व से

भारत के आर्यों के आक्रमण 3000 ई. पू. से

सप्तसैधव विनाश-2700 ई. पू. तक

↓ ↓

सतयुग-रामयुग

2700 ई. पू. में मौर्यकाल 650 ई. पू. तक

वेदकाल-800 ई. पू.

रामकाल-600 ई. पू.

दास/शूद्र/अस्पृश्यता स्थापित

↓ ↓

द्वारपर युग-कृष्णकाल

मौर्यकाल 650 ई.पू. से प्रजाभिन्न शुंग काल 184 ई. पू.

तक

बौद्ध सम्राट बृहद्रथ की हत्या-184 ई. पू.

वेद, रामायण, महाभारत ही संविधान बना रहा

↓ ↓

त्रेतायुग-मनु युग

185 ई. पू. 285 ई. तक

मनुसंविधान-मनुस्मृति की रचना

स्मृतियों/पुराणों की रचनाएं

↓ ↓

कलयुग-शुंगकाल 185 ई. पू. से

शंकराचार्य काल-825 ई. तक

↓ ↓

शिवाजी युग

20 अप्रैल 1627 ई. से 13 अप्रैल 1680 तक

↓ ↓

आर. एस. एस. युग

1680 से आज तक

आर. एस. एस. की स्थापना वर्ष 1925 ई. नागपुर

आदिम साम्यवाद

फ्योदोर कोरोविकन प्राचीन विश्व इतिहास का परिचय देते हैं। 1. सबसे प्राचीन लोग, जिन्हें हम पुरामानव या आदिमानव भी कहते हैं, पृथ्वी पर 50 लाख वर्ष से भी पहले प्रकट हुए। देखने में वे बंदरों जैसे लगते थे। उनका माथा संकरा और ढलवां था और मस्तिष्क बंदर से बड़ा, मगर आज के मनुष्य से छोटा। वे आगे को काफी झुककर चलते थे और हाथ घुटनों तक लटके रहते थे। अंगुलियां बेडौल होने के कारण काम मामूली ही कर पाते थे जैसे पकड़ना, खुदाई करना और चोट मारना। वे मुंह से कुछ अस्पष्ट आवाजें ही निकाल पाते थे और उन्हीं के जरिये अपना क्रोध, भय आदि दिखाते थे। सहायता के लिए वे बुलाते थे और दूसरों को खतरों की चेतावनी दिया करते थे।

2. काम करने के औजार-मनुष्य के पास अधिकांश हिंस्र जानवरों जैसे जबरदस्त पंजे और मजबूत नाखून व दांत नहीं थे। किंतु प्रागैतिहासिक आदमी तेज किनारों वाले पत्थर का इस्तेमाल करना जान गया था। पत्थर की धार तेज बनाने के लिए वह उस पर किसी दूसरे पत्थर से चोट करके उससे छोटी-छोटी चिपियां तोड़ देता था और इस तरह एक ऐसा औजार बना लेता था, जिससे हड्डी तोड़ी जा सकती थी, मूसल बनाया जा सकता था और जमीन खोदने या कुरेदने के लिए नुकीला डंडा तैयार किया जा सकता था। इस औजार को हस्तकुठार या हथकुल्हाड़ा कहते हैं। वह किन्हीं भी दांतों या नाखूनों से मजबूत था और भारी मूसल की चोट भालू के पंजों की चोट से भी जोरदार होती थी।

पत्थर का हस्तकुठार जमीन खोदने, कुरेदने का डंडा और मूसल आदमी के पहले औजार थे। उनकी मदद से लोग अपना भोजन जुटाया करते थे। कोई भी जानवर ऐसे सबसे मामूली औजार भी नहीं बना सकता। आदिमानव और जानवरों में पहला भेद यही था कि आदिमानव अपने लिए काम के औजार खुद बना सकता था।

3. प्राचीन लोगों के धंधे-जंगल के फल, कंद, पक्षियों के अंडे, छोटे-मोटे खाने योग्य मेढक, कछुआ जैसे जीव इकट्ठा कर खाते और एक से दो चार दिनों के लिए संग्रहीत कर लेते थे। ऐसे धंधे खाद्य संग्रहण कहलाते थे। कभी-कभी जब कई दिनों तक भूख सताती तो आदिमानव झुंड बनाकर बकरा, हिरन, सूअर आदि जानवरों को दौड़कर घायल कर देते और फिर पत्थर के औजारों से काट-काट नोंच-नोंच कर खाते तथा कुछ दिनों के लिए संग्रहीत कर लेते। इस तरह आदि मानव के पहले धंधे थे खाद्य संग्रहण और शिकार।

4. आग का उपयोग- प्राचीनकाल में जानवरों की भांति आदिमानव भी आग से डरते थे। आदिमानव ज्वालामुखियों को करीब से आए दिन देखा करते थे। भूकंप आए दिन आया करते थे। चट्टानें आपस में टकराकर आग बन जाया करती थीं और जंगल में भयंकर आग। आदिमानव भाग जाया करते थे। किंतु टंडक में आग अच्छी लगने लगी। जंगल की जली राख से भुने जानवरों को खाने में आनंद आने लगा तो आदिमानव ने पत्थरों को आपस में टकराकर आग पैदा की। इससे वे अलाव जलाने लगे। पेड़ों और उसकी टहनियां जलाने लगे। आग से खुंखार जानव भी भागने लगे तो आदिमानव ने आग और जीवन का कुछ और महत्व जाना। आग का उपयोग जानकर वे जानवरों से और विशिष्ट हो गए।

5. मानव झुंड- प्राचीनतम काल में जगह-जगह खतरे थे। इसलिए कुछ जातिगत विशेषता के कारण आदिमानव झुंड बनाकर रहने लगे। इससे उन्हें पशुओं से बचाव, पशुओं का शिकार तथा साथ रहने में आनंद आने लगा। बर्फीले तथा कुछ गर्म स्थानों पर ये समूह रहने लगे। यहां इन्हें आसानी से कंद, मूल, फल, घास (साग-भाजी-नरम स्वादिष्ट पत्तियों वाली) ह्वेल मछलियां आदि की सुविधा थी, जो आसानी से मिल जाया करते थे। सबसे प्राचीन लोगों के अवशेष, उनकी हड्डियां दांत और काम के औजार अफ्रीका, एशिया और यूरोप में पाए गए हैं।

राहुल सांकृत्यायन ने (मानव समाज) लिखा है कि वनमानुष और कुत्ते जैसे समझदार प्राणी भी सामने की वस्तु के प्रतिबिंब को लेकर मस्तिष्क से कुछ सोचने की क्षमता रखते हैं, किंतु उनका सोचना सिर्फ वर्तमान के

प्रकाश में होता है। मनुष्य असोची होता है, वह भविष्य की सुरक्षा का पहले से ख्याल करता है और आज के सुख के लिए वर्तमान में दुख झेलने को तैयार रहता है। तुच्छ लाभ यदि हाथ में आ गया हो, तो भी वह उसे छोड़ सकता है, यदि मालूम हो कि उसके द्वारा वह बड़े लाभ का अधिकारी बन सकता है। उसके सामाजिक सदाचार इसी दिशा में किए गए प्रयत्नों के फल हैं और उस विशेष परिस्थिति तथा प्रयोजन के बदल जाने पर उन्हें भी बदलने की जरूरत है। पशु प्रकृति के साथ संघर्ष अपने वर्तमान के अस्तित्व-केवल अस्तित्व को कायम रखने के लिए करता है और उसके लिए सहज जन्मजात साधनों को इस्तेमाल करता है। लेकिन मनुष्य अपने वर्तमान के अस्तित्व के लिए ही प्रयत्न नहीं करता, सहज साधनों से ही मुकाबला नहीं करता, बल्कि भविष्य में भी अपने और अपने संबंधियों तथा समाज का अस्तित्व रखने के लिए नए साधनों-हथियारों का आविष्कार करता है। इसलिए मनुष्य सामाजिक पशु होने के साथ-साथ हथियारधारी पशु भी है। मैन इज ए सोसल एनिमल-मनुष्य एक सामाजिक जानवर है।

6. काम के औजारों का विकास-पृथ्वी निर्माण के पश्चात मानव के इस धरती पर रहते लाखों वर्ष बीत गए थे किंतु दो लाख वर्ष पूर्व शीत एकाएक बढ़ गया, इससे सबसे पहले यूरोप प्रभावित हुआ। शीतकाल टंडा और लंगा हो गया। अल्पकालीन ग्रीष्म में उत्तरी यूरोप में हिम पिघल नहीं पाता था, यहां सारी धरती को एक विशाल हिमावरण ने ढंग लिया था, जिसकी मोटाई कहीं-कहीं 2 हजार मीटर थी। हिमावरण के दक्षिण में टुंड्रा फैल गए, जिनमें वनस्पतियां बहुत कम थीं। गरमी से आदि जीवजंतु अधिकतर मर गए और शेष दक्षिण की ओर भाग गए। मनुष्य हिमयुग की इन कठिन परिस्थितियों में भी जीवित बचा रहा। इन लाखों वर्षों के संघर्षों के उपरांत लोगों ने पत्थरों के नुकीले हथियार चाकू, भाला, खुरची आदि बनाना सीख लिया था। गूदा निकालने के लिए हड्डी तोड़ते हुए उन्होंने देखा कि हड्डी के टुकड़ों की किनारियां पैनी होती हैं। अतः वे हड्डियों और सींगों से सूए, सुइयां और कांटेदार बर्छियां बनाने लगे। लेकिन पत्थर के औजार मुख्य औजार बने रहे।

7. शिकार-मानव समूह भालों और कांटेदार बर्छियों से लैस होकर जंगली जानवरों, सुअरों, बैलों, हिरनों और घोड़ों के झुंडों का शिकार किया करते थे। शिकारी जंगली जीवों के झुंडों का पीछा करते थे और भालों, बरछों तथा जलती आग की टहनियों से भागने को मजबूर करते थे, जहां कोई अंधेरी गुफा, खड़ी चट्टान या कगार होती थी। या जिधर दूसरे शिकारी घात लगाकर बैठे होते थे और घायल कर देते थे। इन खाने वाले पशुओं में महागज (मैमथ) भैंसा जैसा होता था, को मारने के लिए उधर खदेड़ते थे। जिधर कोई गड्ढा होता था या खोद लेते थे, शिकार के लिए वह पशु उधर भागते हुए उस गड्ढे में गिर जाते और घायल होकर पकड़ में आ जाते।

अब शिकारी ज्यों-ज्यों अनुभवी उम्रदार होते गए। साथ में स्त्रियां भी होतीं। आपस में यौन संबंध भी होता, जो लज्जा महसूस होने लगी और उसके लिए सबसे पहले तन ढंकना अनिवार्य समझा गया। पशुओं के शिकार से दो लाभ होते एक-मांस और दूसरे तन ढंकने हेतु खाल भी मिलने लगी। अंधेरे और नम गुफाओं में मनुष्य ने रहना शुरू किया और धीरे-धीरे गुफाओं और पेड़ों से हटकर पेड़ जैसा या ढलवा झोंपड़ियां भी बनाने लगा था। शिकार इनका मुख्य धंधा, मांस और भोजन, जानवर की खाल, पेड़ों की छाल, घास-फूस के टाट इनका वस्त्र, झोंपड़ियां और गुफाएं इनका घर।

8. लोगों में परिवर्तन कैसे और क्यों आया? लगातार काम के करते रहने से काम, दिमाग, चैतन्यता, चेतनता, कुशलता, परिपुष्टता एवं सिद्धहस्तता आने लगी थी। पत्थर, लकड़ी, सींग, हड्डी आदि के औजार बनाने तथा उनके प्रयोग से व्यक्तियों के हाथ-पैर और मजबूत होते गए। शिकार की कला और बेहतरी कुशल होती गई। अब यह विचार होने लगा कि हथियार कैसे बनाना है? कौन-सा शिकार करना है? कहां रहना है तथा स्वयं की सुरक्षा कैसे करनी है? किसी विपत्ति के समय किसको, कैसे, कहां, क्या करना है? शव आदि को कैसे, क्या करना है, श्रम व्यक्ति के मानसिक विकास में सहायक होता है

अतः आदिमानव ने इसका खूब उपयोग किया और 50 हजार वर्ष पूर्व अपनी आज के आदमी जैसा बन गया। आज का मानव प्राज्ञ मानव (होमो सेपियंस) है। मनुष्य का सृजन श्रम के द्वारा हुआ है।

9. गोत्र समूहों का उदय- एक साथ रहने, खाने-पीने, सोने बैठने, जीने मरने अथवा मृतक का संस्कार करने और यौन संबंधों के चलते साथ-साथ रहने वाले समूह एक गोत्रीय अथवा नामधारी समुदाय हो गए। इस प्रकार के गोत्र समुदाय का उदय 50 हजार वर्ष पूर्व हो गया था, विभिन्न गोत्रों अथवा समूहों से कुलों का आविर्भाव हुआ। प्रत्येक गोत्र में दस-बीस, पचास या सौ-सौ लोग होते थे। धीरे-धीरे इनके आवास स्थायी होने लगे और यहीं से नागर (नगर) जीवन की शुरुआत हुई। अब प्रत्येक कार्य सामूहिक और मिल बांटकर होने लगा था। सीमित क्षेत्र की संपत्ति गोत्रीय होने लगी थी। गोत्र आनुवंशिक पहिचान होने लगी। सारी संपत्ति जैसे- जल, जंगल, जमीन, गुफाएं, पेड़, फल और नदियां साझा होने के कारण सबका सामुदायिक हक होने लगा था। इसे ही आदिम सामुदायिक व्यवस्था कहते हैं।

10. प्राचीनतम कला- प्रागैतिहासिक कला का जन्म कोई 40 हजार वर्ष पूर्व हुआ। जो मानव द्वारा मानवीय एवं प्राकृतिक कला थी। प्रकृति द्वारा परत परत निर्मित चट्टानों के टूटने, सूरज, चांद, सितारे, फूलों, पेड़ों, भौरों, बैलों, सांडों और हंसों की आकृति मिली। नभ में विचरण करते पक्षियों, मछली का शिकार करते चील, कौवों, बगुलों एवं स्वयं द्वारा किया गया शिकार का गुफाओं की दीवारों पर उसे उकेरने की प्रथम कला थी। फिर प्राज्ञ मानव ने पत्थरों की उन्हीं आकृतियों की मूर्ति ढालने लगा। प्रागैतिहासिक काल की कलाकृतियों से स्पष्ट है कि प्राज्ञ मानव सूक्ष्मदर्शी था, जानवरों, पक्षियों तथा प्रकृति के कण-कण को भलीभांति जानता था और उसका हाथ पत्थरों, सींगों, गुफा की दीवारों तथा हड्डियों पर उसके दिमाग व उंगलियां बड़ी कलात्मकता के साथ चलते थे।

11. प्रकृति के समक्ष असहाय एवं भयभीत आदि मानव आंधी, तूफान, वर्षा, बाढ़, भूकंप, ज्वालामुखी, जंगल की आग, डाइनासोर, बाघ, शेर आदि को दैविय प्रकोप मानता था, इसी से वह सदैव डरा और सहमा रहता था। वो ये समझ नहीं पाते थे कि यह क्या, क्यों और कैसे हैं? नैसर्गिक परिघटनाओं को न जानने के कारण जहां घटना घटित होती, वहां से स्थाई वास करने वाले समूह भी अपना स्थान बदल देते थे। इस प्रकार आदिमानव एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते रहे और प्राकृतिक प्रकोप से डर कर भागते-भागते स्थान बदलते-बदलते सारी धरती पर जीते-मरते फैल गए। इसी बीच में वे अनुभवी और प्रगतिशील हो गए। फिर भी उनके मन में एक धारणा स्थाई बन बैठी कि ये घटनाएं अलौकिक हैं। जिन्हें न तो मनुष्य कर रहा है, न कर सकता है, न उसे रोक सकता है।

12. धार्मिक विश्वासों का जन्म-स्वप्न क्या है? दिनभर या पिछले महीनों, वर्षों में खींचे गए कार्यों, देखे दृश्यों या अनुभवशील कर्मों को सोने के समय निद्रा में विकृत रूप में देखने को स्वप्न कहते हैं। यही स्वप्न विश्वास में बदल गए क्यों स्वप्न का कार्य रूप में परिणत होना और जीवन भी एक स्वप्न होना, ये आदिमानव को विस्मित कर दिया था। आज का प्राज्ञ मानव भी अभी स्वप्न पर 90% विश्वास करता है। आदिमानव ने इसे देवी-देवता और ईश्वरीय शक्ति माना। किसी गुफा, चट्टान या झील के पास गया। सन्नाटे में डर गया और वहां उस स्थान के नाम को एक देव मान बैठा। जहां कोई मर गया, उसे (स्थान व मृतक) दोनों को देख मान लिया। जो किसी समूह में ज्यादा बहादुरी से शिकार करता था और वह मर गया, वह भी एक बहादुर देव हो गया और सामुदायिक पूज्य हो गया।

मेरे व्यक्ति की आत्मा, झील झरने, चट्टान की आत्मा, भयंकर दिखने वाले पहाड़ भूत-पिशाच और श्मशान घाट, मृतकों का घर नरक हो गया। वहीं जहां बहुत से डरे-सहमे, किसी पहाड़ी पर जाकर मारे भय के 'देव-देव' कहने लगे वह स्वर्ग हो गया। और फिर समूहों के द्वारा वहां पूजा-अर्चना होने लगी। इस प्रकार प्रत्येक समूह-गोत्र का एक सामूहिक धर्म-विश्वास हो गया।

अंधविश्वास—जादू—टोना आदि बलिप्रथा का जन्म हुआ।

13. पशुपालन—कोई 80 हजार वर्ष पूर्व पृथ्वी पर फिर गरमी बढ़ गई, बर्फ पिघली और उत्तर की ओर हटता चला गया। हिमयुक्त भूमि पर पुनः पेड़-पौधे, झाड़ियाँ उग गईं। शीत के आदी जीवजंतु उत्तर की ओर खिसकते चले गए। ऐसे ही शीतऋतौ मनुष्य भी बर्फीले स्थान की ओर प्रस्थान कर गए। बीच में नदी—नाले पड़े तो पहले बेड़ा फिर लकड़ी की छिछली नाव (डोंगी) बनाई और इस प्रकार इनका विस्तार समस्त एशिया एवं यूरोप में हो गया।

कुत्ता एक ऐसा जानवर है जो मनुष्यों के बीच रहकर जूठन खाकर जानवर रहने वाला प्राणी है। उसमें जन्मजात जूठन खाने, पालतू, चाटुकारिता में दुम हिलाने और मालिक की ओर से जितना खाने उतना भौंकने की आदत है। इसीलिए मनुष्य का पहला पालतू पशु बना कुत्ता। वह पीछे—पीछे दौड़ता, शिकार का पीछा करने में मदद करता तथा रात्रि में सोते वक्त हिंसक जानवरों/चोरों से रक्षा में भी सहायक बना। इसी बीच टहनी मोड़कर डोरी बांधकर धनुष और लकड़ी का बाण प्रथम विशिष्ट हथियार बनाया और वह आदिमानव अब पशु—पक्षी, जानवरों को एकाएक मार नहीं डालता, बल्कि घेर कर पकड़ लेता और पालने भी लगा। घेर कर घास भी चराने लगा। भेड़, गाय, सुअर, बकरी, मुर्गी, बत्ख आदि को बाड़ा बनाकर पालने भी लगा था और इस प्रकार उदय हुआ शिकार से पशुपालन।

14. कुदाल कृषि की उत्पत्ति—आदिमानव जंगल में रात—दिवस चौबीस घड़ी व्यतीत करता था। जंगल से ही वह फल, फूल, पत्ते तथा खाने योग्य कच्चा—पक्का अनाज आदि प्राप्त करता था। यह सब प्रकृति प्रदत्त था। इसमें मानव का कोई हाथ नहीं था, किंतु कुछ प्राज्ञ मानवों यह भी देखा और विचार किया कि जो फल खाकर उसकी गुठली फेंक देते हैं, वे अगली वर्षा या नमी को प्राप्त कर कुछ समय पश्चात वे अंकुरित हो जाते हैं। धान, गेहूँ, आम, अमरुद, आदि—आदि प्राज्ञ मानव ने उसी काल में यानी 20 हजार वर्ष पूर्व सोचा कि यदि इसे एकात्रित कर सीजन में बोया जाए तो ढेर सारे पैदा हो सकते हैं, तब तक कुदाली का आविष्कार हो चुका था अतः आदि प्राज्ञमानव ने कुदाली से खोदना, बोना, पानी देना और हल्की—फुल्की फसल काटना सीख लिया। इस फसल के लिए उसे महसूस हुआ कि कृषि हेतु उसे कुदाल, बीज और पानी की आवश्यकता है और इस प्रकार से गोत्र की भोजन संबंधी आवश्यकता पूरी होने लगी। इस कृषि में कुदाल से विशेष काम लिया जाता था अतः प्रथम कुदाल कृषि कहा जाने लगा।

15. शिल्पकला का उदय— हाथ से बनाए गए हर प्रकार के औजार व चीजों के बनाने को शिल्प कहते हैं। कृषि और पशुपालन के साथ ही साथ शिल्पकला का भी विकास हुआ। उस समय जिस शिल्प कला का विकास हुआ वह मिट्टी के बर्तन बनाना व आग में पकाना। नरम लताओं के डंठल से टोकरी बनाना, पत्थर के सिल—बट्टा बनाना, जांत बनाना, वनस्पतियों के रेशे से जाल बुनना, कपास से सूत काटना, छोटी पहियों की गाड़ी तथा ठेला बनाना आदि।

16. गोत्र और कबीलों का उदय—जब खेती की शुरुआत हो गई तो खेती एक व्यक्ति के बस की बात कतई नहीं होती। इसमें स्त्री—बच्चे, सहित कई लोगों की जरूरत होती है। इसी समय लकड़ी में नुकीली लकड़ी तिरछी बांधकर खींचने से हल और बैल, ऊंट तथा गधों की जरूरत हुई। खेत बनाने के लिए जंगल काटना, लकड़िया, झाड़ियाँ काटने की जरूरत हुई और फसल खाने वाले व्यक्ति समूह एक गोत्र बन गए। फसल तथा समस्त संपत्ति पूरे गोत्र की मानी जाने लगी। शिल्पकार शिल्प के समस्त औजार तैयार करता, स्त्रियाँ जो गोत्र अथवा पालन—पोषण करने वाले एक भावनात्मक लगाव से जुड़ गए। एक समूह के लोग एक गोत्र कहलाए, एक इलाके के गोत्र गण (कबीला) कहलाए। एक गोत्र और कबीला एक ही भाषा, एक ही रीति—रिवाज, खान—पान का व्यवहार करता था। एक गोत्र का मुखिया कहलाया।

कई मुखियाओं का तंत्र मुखिया परिषद कहलाई जो गण की समस्त समस्याओं का निपटारा करतीं। पशुओं से फसल की रक्षा के लिए, बाहरी मनुष्यों द्वारा गोत्रों की रक्षा के लिए एक लट्ट—(सेना) गठित हुई। उसका मुखिया सरदार कहा गया और गठन हुआ प्रथम लोकतंत्र पंचायक।

इसी गोत्र समुदाय से परिवार तथा परिवारों से ग्राम समुदाय (सभा) की उत्पत्ति हुई। हल और ग्राम समुदाय की उत्पत्ति (गठन) से आदिमानव युग में भविष्य की एक मजबूत नींव तैयार हुई। बहुत से कबीले जहां रहते थे, चट्टानों में धातुओं की चट्टानें भी थीं। ये पत्थर से सख्त किंतु मुलायम थी। यह तांबा था। इसके औजार हड्डी, पत्थर और लकड़ी से ज्यादा मजबूत थे। इसका उत्पादन अधिकाधिक मात्रा में होने लगा था। उत्पादन के औजार जब बदल जाते हैं तो व्यक्ति के आपसी संबंध भी बदल जाते हैं। आपसी कलह बंटवारे को लेकर शुरू हुआ तो मुखियायों ने विभिन्न गोत्रों (समूहों) में चारागाह, चट्टान और जमीन का बंटवारा कर दिया। जंगल साफ करने में मदद करने वाले सहित हर कृषि कर्म करने वाले परिवार को गोत्रानुसार जमीन मिली। अब समुदाय की बनावट में भी परिवर्तन आ गया। अब गोत्र समुदाय पड़ोसी और ग्राम समुदाय हो गया। उनके वाद—विवाद ग्राम सभाई हो गए। भूमि सामूहिक स्वामित्व किंतु कारोबार गोत्रीय हो गए। इन्हें प्रथम सामुदायिक किसान कहा गया।

17. ग्राम समुदाय में संभ्रांत लोगों का उदय— ग्राम समुदाय में जो—जो मुखिया उभरे, वे ही विवाद निपटारा करते, जमीन बंटवारा करते और ग्राम—ग्राम के बीच बड़े विवाद को अपने लठैतों (सेना) से निपटाते। सेना के सदस्यों को वेतन इन्हीं के द्वारा फसलों से लेकर वेतन देते। इस प्रकार इस वर्ग का समस्त ग्राम समुदाय पर वर्चस्व कायम हो गया। इनकी बातों को कोई टाल नहीं सकता। इनके फैसले अटल होने लगे। फैसलों पर अमल डंडों से भी मनवाया जाने लगा। ग्राम सभा पर मुखियाओं और सैनिकों का दबदबा हो गया। अब ये संभ्रांत व्यक्ति बन गए। अब मुखिया का बेटा और सैनिक का बेटा सैनिक होने लगा। धीरे—धीरे ये पद आनुवंशिक हो गए। बाद में यही कुलीन कहलाए। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' यहीं से शुरू हुई। मुखिया और सैनिक बंटवारे में ज्यादा से ज्यादा जमीन, जल, जंगल, खनिज पदार्थ, सोना, चांदी, कोयला, अभ्रक, तांबा, लोहा आदि हथियाने लगे, विवाद होता मुखिया और सैनिक साथ—साथ होकर निबट लेते। समुदाय पर संभ्रांत शासन शुरू हुआ। गोत्र के सामुदायिक कार्य खत्म हो गए। आदिम सामुदायिक व्यवस्था का अंत हो गया और असमानता की उत्पत्ति हुई।

दास—विश्व परिदृश्य

दास का अर्थ है कसाई का बैल। वह बैल जिसके गले में रस्सी बंधी हो, पैरों में, हाथों में रस्सी बंधी हो, दिन भर पीट—पीट कर काम लिया जाए, नंगा रखा जाए, केवल जीने मात्र के लिए खाना दिया जाए। जब चाहे खरीद और बेच लिया जाए, मन आए गला रेत दिया, तब भी जी न भरे तो उसे जिंदा या मुर्दा भून कर खा लिया जाए या चील—कौवों को खिला दिया जाए। फिर भी बैल असहाय कुछ बोल न सके, चीख न सके, उसे दास कहते हैं। अर्थात् जन्मजात, खरीदे, हारे, जीते, कर्जदार, भैंटी, बंधकी, शांति, कर्मकर भृत्य अथवा विजित राज्य के औपनिवेशिक गुलाम जो कि स्वामी विजेता अथवा साम्राज्य (स्वामी) की चाकरी, घृणितम कार्य करने, पशुओं की तरह मर—मर कर खटने, बिकने अथवा कटने को मजबूर हो उन्हें दास कहते हैं।

आरंभ में आदिमानव कबीलों के बीच होने वाले युद्धों में पकड़ हुए व्यक्तियों को मार डालते थे। युद्धबंधी को इसीलिए मुर्दा कहते थे। किंतु इनकी मेहनत का फल अधिक दीखने लगा तो स्वामियों को लालच आ गया। और युद्धबंदियों को मारने की बजाय उनसे काम लेने लगे। संभ्रांत लोग अब उन मुर्दा पर कब्जा करने लगे और दासों के लिए संभ्रांत—संभ्रांत आपस में लड़ने लगे। दास अब जिंदा—मुर्दा कहे जाने लगे। क्योंकि दास के जरा सी भी

आंख दिखाने पर उसकी आंख फोड़ दी जाती, आंखों पर पट्टी बांधकर हल जोता जाता। फसल में रात—दिन ढेकली से पानी खिंचवाया जाता। खेत खुदवाया जाता। चक्की पिसवाई जाती, पानी की रहट खिंचवाया जाता। दास रात—दिन मेहनत कर अच्छी फसल पैदा करते, पानी ढोकर लाते, चक्की चलाते, शिकार कर लाते और खाने के नाम पर जीने मात्र के लिए टुकड़ा पाते, पहनने को चिथड़ा और सोने को पशुशाला या खुला आसमान। दास जो कुछ भी कमाते सब मालिक का होता।

इन्हें दास दस्यु (शत्रु) और म्लेच्छ कहा गया। दासों के काम कराने के लिए निरीक्षक रखे गए, उन्हें अधीक्षक कहा गया। दासों की निगरानी करने वाले को प्रहरी (पुलिस) कहा गया। इनसे 'कर' लेने वाला तथा देख—रेख करने वाला, हिसाब, किताब करने वाला कर्मचारी कहा गया। विवादों का निपटारा करने वाला न्यायाधीश कहा गया। धीरे—धीरे दासों की संख्या संभ्रांत के दस—बीस—पचास गुना बढ़ गई तो मुखिया ने सेना की संख्या बढ़ाकर अपने को राजा की पदवी धारण कर ली और सशस्त्र सेना की वृद्धि इतनी कर ली कि जैसे भी हो रासों अथवा दुश्मनों से निपटा जा सकता था। इस प्रकार से आदिम राज्य की उत्पत्ति हुई। राज्य की सीमाबंदी, प्रस्तर निशानी हुई। नदी—झील अथवा पहाड़ सीमा निशान बने।

स्पार्टजनों ने विजित इलाकों की अधिकांश आबादी को दास बना लिया। अपने दासों को वे हेलट या हीलोटीज कहते थे। जिसका मतलब था, बंदी बनाए हुए शत्रु। विजेता लोग ही दासों के स्वामी थे। हर स्पार्टावासी के पास अपनी भूमि थी। जिस पर कई हेलट परिवारों से खेती करवाई जाती थी, हेलट जो कुछ भी अपनी मेहनत से पैदा करते थे, उसका आधा मालिक ले लेता था। यहां से दासों की आर्थिक स्थिति में कुछ परिवर्तन उन्हें उनकी मेहनत का आधा हिस्सा मिलने लगा था। अब स्पार्टा के पास अच्छे दास थे। हेलट अपने शोषकों — स्पार्टनों से घोर नफरत करते थे और अनेक बार उन्होंने विद्रोह भी किया। हेलटों को डराए धमकाए रखने और विद्रोह न होने देने के लिए स्पार्टन उनमें से सबके ताकतवर और साहसी लोगों को जान से मार डालते थे।

पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में यूनान में दासप्रथा—इस समय यूनान में मानो दासों की बाढ़ सी आ गई। दास अधिकतर लड़ाइयों के द्वारा मिलते हैं। युद्ध से दास पैदा होते हैं। युद्ध बंदियों को ही नहीं शत्रु देश में पकड़ी हुई स्त्रियों और बच्चों को भी दास बना लिया जाता था। एशिया कोचक पर एथेंस पर एक आक्रमण के दौरान ही 20 हजार से ज्यादा लोगों को पकड़कर बेच डाला गया। जलदस्यु या समुद्री डाकू भी जिन्हें पीराटेस कहते थे, खुले सागर में व्यापारिक पोतों पर या फिर तटवर्ती बस्तियों पर हमले करके लोगों को पकड़ लेते थे और दासों की तरह बेच डालते थे। भूमध्य सागर और कालासागर के तटों पर स्थित देशों से यूनानी मालों के एवज में दासों को आयात किया जाता था।

दासी का बच्चा दास होता था और अपनी मां के स्वामी की संपत्ति माना जाता था। किंतु यूनान में दासियों का जीवन अत्यंत कठिन होने से उनके बच्चे बिरले ही जिंदा रह पाते थे। ऐसे दास कभी—कभी खुद ही अपने बच्चों को मार डालते थे कि उनका बेटा कभी दास न बने। यूनान में अधिकतर दास विदेशी थे। कुछ दास यूनानी भी थे। कतिपय यूनानी नगर राज्यों में कर्ज अदा न कर पाने पर दास बना लेने का रिवाज पहले की तरह ही जारी था। यूनान के अधिकतर नगरों में दासों की मंडियां थी। इन मंडियों में दास हमेशा भरे रहते थे। रस्सियों से बंधे हुए। इनमें स्त्री दास, बच्चे तथा युवा और प्रौढ़ हुआ करते थे। दासों के सीने पर किस देश व नस्ल का है, लिखी हुई एक तख्ती लटकी रहती थी। यह भी लिखा रहता था कि वह किस—किस कार्य में कुशल है। खरीददार भी जिंदामाल को खूब देख—परख कर लेते थे। हड्डी, मांसपेशियां, काम करने की शक्ति, दौड़ने व मेहनत करने की क्षमता, भार

ढोने की ताकत आदि देखी जाती थी। ताकि वे नकारा साबित न हो। दाम खूब मोल-भाव कर तय होता था।

पास अपने स्वामियों के विरुद्ध बहुत ही विद्रोह करते थे। उनके काम के औजार तोड़ डालते थे। जानवरों को अपंग बना देते थे। भागने की कोशिश करते थे। पकड़े जाने पर खूब सजा भी भुगतते थे। पर जब भी मालिक पकड़ में आ जाता तो दास उसे पकड़ कर जमीन पर पटक देते थे। उसकी अंतड़ी फाड़ कर बाहर निकाल लेते। कलेजा निकाल कर खा जाते। यह नफरत वर्ग संघर्ष था, दासों का दास स्वामियों के विरुद्ध। 500 ई. पू. में स्पार्टा में भूचाल आया, काफी विनाश हुआ। हेलटों ने अच्छा अवसर देखकर धावा बोल दिया। दासस्वामियों (सामंतों) ने अन्य राज्यों से मदद की गुहार लगाई, कुछ पकड़े गए किंतु आधे दासों की टुकड़ी ने आजादी पा ली और स्पार्टा छोड़ दिया।

रोम की दास व्यवस्था सबसे दयनीय थी। रोम की स्थापना ही क्रूरता से हुई थी। यहां गोत्र मुखिया के दो भाई ही एक दूसरे के बेटों के खून के प्यासे हो गए एक भाई ने दूसरे भाई को मार डाला, और उनके दो बेटों रोमुलस और रेमस को नदी में फेंकवा दिया। इन दो अबोध बच्चों को जो नदी से बहकर किनारे एक भयंकर जंगल के किनारे चट्टान पर लग गए थे, संयोग से वहीं भेड़ियों के बच्चे भी थे। भेड़िन ने अपने बच्चों के साथ-साथ रोमुलस और रोमस को भी दूध पिलाकर बड़ा किया। रोमस कहीं राज्य न छी ले, रोमुलस ने उसे मार डाला और अपने चाचा की भी हत्या कर अपनी जो नगरी बखाई उसे रोम कहते हैं। वहां भेड़िन की पूजनीय प्रतिमा स्थापित है।

रोमुलस की विजय शोभायात्रा जो निकली देखिए- 'सारी जनता शोभायात्रा को देखने के लिए सड़कों पर निकल आई। पहले दिन सुबह से शाम तक लूट में मिली हुई मूर्तियों और चित्रों से लदी हुई 250 गाड़ियां ही गुजरती रहीं। अगले दिन सबसे सुंदर और मूल्यवान हथियारों से भरी गाड़ियों का तांता लगा रहा। हथियारों के तांबे और लोहे की चमक आंखों को चकाचौंध किए दे रही थी। हथियारों के ढेरों में अनगिनत तलवारें और भाले भी थे। गाड़ियों के पीछे चांदी के सिक्कों से भरे 750 घड़े ले जाए जा रहे थे। हर घड़े को चार-चार आदमी उठाए हुए थे। उनके पीछे चांदी की चषक और कलश उठाए आदमी चल रहे थे।

तीसरे दिन बलि देने के लिए 120 हष्ट-पुष्ट और सोने से मढ़े सींगों वाले बैल लाए गए। इसके बाद दूसरे दिन जैसे बड़े घड़ों में सोने के सिक्के ले जाए गए। इनके पीछे लोग चल रहे थे, जो अपने सिरों पर हीरे-जवाहरात जड़े निखालिस सोने का घड़ा और सोने के दूसरे बर्तन उठाए हुए थे। इनके पीछे सम्राट कर रथ था। रथ पर उसका राजदंड और उस पर राजमुकुट रखा हुआ था।'

युद्धों के दौरान अंधाधुंध लूट के जरिए अपार संपत्ति और घास दोनों मिलते थे। इसके अलावा जलदस्यु भी आम लोगों को पकड़ते और दास बनाकर बेचते। रोमन राज्य में सैकड़ों दास मंडियां थी। जहां प्रतिदिन दसियों हजार दासों की खरीद और बिक्री होती थी। इस काल तक सामंत वर्ग ने बड़े-बड़े भूखंड तो हथिया ही लिए थे, अब भी भूखंड लूटना, छीनना और लघु किसानों, दासों, विकलांगों और निर्धनों से भूखंड खरीदना जारी था। बड़ी जागीरें लगातार बढ़ रही थीं और दास-भारी हलों को खींचने, कृषि करने, पानी खींचने, मवेशी चराने, कुदाल-फावड़ों से जमीन खोदने-जोतने, अंगूर, जैतून पैरने व आटा चक्की खींचने को विवश थे। रोमी सामंतों के औजार तीन तरह के थे-1. गूंगा जैसे ठेला और हल, 2. रंभाने वाले जैसे बैल और 3. बोलने वाले जैसे दास। दास बनने के पश्चात उसका नाम खो जाता था। अब दास को केवल घृणित शब्दों के द्वारा ही पुकारा जाता था। जैसे पारसीक, हेल्लट, मिश्री, इंडी, शूद्र, दस्यु, स्लेच्छ आदि। रात में इन्हें बेड़ियों में कसकर बैलों के साथ रखा जाता था। भारत में ऐसे ही शूद्रवर्ग की उत्पत्ति हुई।

टाइबेरियस ग्रेकस ने किसानों को भूमिखंड दिए जाने की मांग क्यों की? इसके उत्तर में वे कहते हैं कि - "दस लोग सैन्य सेवा के काबिल नहीं हैं, क्योंकि वे अपने मालिकों के प्रति कभी वफादास नहीं होते। उसने उसकी याद दिलाई कि कैसे कुछ ही समय पहले सिसिली में दासों ने मालिकों के खिलाफ बगावत की थी और कैसे रोमन बड़ी कठिनाई से और लंबे समय तक लड़ने के बाद ही इन दासों को कुचल सके थे और यह संघर्ष करना कितना खतरनाक था। अपने इर्द-गिर्द खड़ी जनता को संबोधित करते हुए टाइबेरियस जब गरीबों के पक्ष में बोला, तो उसकी उग्रता और निर्भीकता देखने ही योग्य थी। उसने कहा कि इटली में जंगली जानवरों की भी अपनी मांद, रात को सोने की अपनी जगह होती है। लेकिन जो लोग इटली के लिए लड़ रहे हैं, मर रहे हैं, उनके पास हवा और उजाले के सिवाय और कुछ नहीं है। ये बेघर लोग अपने बीबी-बच्चों के साथ बंजारों की तरह जहां-तहां भटकने को मजबूर हैं। सैनिक दूसरों के ऐशोआराम, अमीरी के लिए लड़ रहे हैं, जान दे रहे हैं। उन्हें सारी दुनिया का मालिक कहा जाता है, मगर उनके पास जमीन का ऐसा एक टुकड़ा भी नहीं, जिसे वे अपना कह सकें।"

रोम का दास विद्रोह सारी दुनिया में प्रसिद्ध हैं। दासों का नेता स्पार्टाकस 74 ई. पूर्व में रोम के कापुआ नगर में जो सबसे बड़ा ग्लेडिमेटर जेल था, दस हजार दासों का विद्रोह का पाठ पढ़ा दिया। उसका नारा था-इस दुर्दशा से मरना बेहतर है। जेल अधिकारियों को षडयंत्र का पता चल गया, फिर भी हजारों दासों और हथियारों के साथ स्पार्टाकस भाग निकला। 50 कि.मी. की दूरी पर विसूवियस पहाड़ पर सभी एकत्रित हुए। स्पार्टाकस को सभी ने अपना नेता माना। वह समझदार, ताकतवर और बहादुर था। उसका जन्म उत्तरी बाल्कन में हुआ था। रोमनों ने उसे पकड़कर बंदी बना लिया था। उसके भागने की कोशिश में उसे ग्लेडियर बना दिया गया था। इनके पास मुख्य हथियारों में चाकू, तलवारें, ढालें आदि थे। बाद में कई जागीरों पर ये हमला करते और वहां से हथियार छीनते और दासों को मुक्त कर अपनी 'स्पार्टाकस सेना' में शामिल कर लेते। कई बार विसूवियस पहाड़ पर से ही रोम की सेनाओं को धूल चटाई। खबर सर्वत्र फैल गई। इटली के दास छिपककर भाग-भाग कर 'स्पार्टाकस सेना' में शामिल होने लगे। स्पार्टाकस की सेना में रात-दिन लुहार हथियार बनाने लगे।

अब स्पार्टाकस ने सारी सेनाओं का गठन कर लिया था। पैदल, अश्वारोही, हाथी सेना और गुप्तचर संगठन। स्पार्टाकस ने अपनी सेना को लेकर उत्तर की ओर कूच कर दिया। सेनेट जानती थी कि विद्रोहियों की सेना कितनी विकराल है। उसने दोनों कोंसुलों से उसका दमन करने के लिए भेजा। स्पार्टाकस ने उन्हें परास्त कर दिया। रास्ते में मिलने वाले रोमन दस्तों का सफाया करते हुए विद्रोही आखिरकार सारा इटली पार कर पो नदी की घाटी में पहुंच गए। किंतु अचानक ही स्पार्टाकस को वापस लौटना पड़ा। शायद दास इटली छोड़कर बाहर जाना नहीं चाहते थे।

स्पार्टाकस की वापसी की सूचना पाकर रोमनवासी स्वामी, सभ्रांत कांप गए। उन्होंने शीघ्र ही एक विशाल सेना एकत्र की। बहुत से स्वामी खुद ही हथियार लेकर सेना के साथ लड़ाई में शामिल हो गए। क्रैसस नामक अमीर स्वामी को सेनापति बनाकर रोमनिवासी ने स्पार्टाकस की सेना से भिड़े। स्पार्टाकस ने क्रैसस की चार हजार सेना को मार डाला। 15 हजार सेना भाग खड़ी हुई। क्रैसस भी भाग गया। पर हाथ उठवा कर अपनी सेना के भागने वाले तीन हजार सैनिकों को मरवा डाला। दुबारा क्रैसस ने स्पार्टाकस की सेना पर हमला न करके उसने उस संकरे स्थल-संयोजी पर कब्जा कर लिया, जो अंतरी से बाहर निकलने का एकमात्र स्थलमार्ग था और उसके एक तट से दूसरे तट तक गहरी खाई और मिट्टी की ऊंची दीवार बनवा दी। विद्रोही अब चारों तरफ से कट गए।

सेवा में,	
नाम	
पता	
.....	
.....	

उनके बीच भुखमरी फैल गई।

स्पार्टाकस ने उत्साह बढ़ाया- "भूखों मरने से बेहतर है। दुश्मन को मार कर मरना।" पर दास बिखरते गए और क्रैसस कुचलता गया। इस बीच बाल्कन से रोमन लीजिनें इटली पहुंचने लगी थीं और स्पेन से पांपी के नेतृत्व में आ रही लीजिनें भी काफी निकट पहुंच चुकी थीं। स्पार्टाकस ने रोमन सेनाओं को न मिलने देने के लिए क्रैसस के दस्तों पर हमला बोल दिया।

अंतिम मुकाबला लगातार तीन वर्ष तक स्पार्टाकस क्रैसस की सेनाओं के साथ युद्ध करता रहा। पर हार नहीं मानी। 71 ई. पू. में स्पार्टाकस कमजोर पड़ गया। दास सैनिक मरते और बिखरते गए। स्पार्टाकस किसी तरह क्रैसस को मार कर रोमनों को नेतृत्व विहीन कर देना चाहता था। उसके प्रहारों से अनेक रोमन सेना नायक मारे गए। किंतु स्पार्टाकस को भी चोट लगी। चोट उसके पुट्टे में लगी थी। घायल होने के बावजूद वह एक घुटने पर खड़ा चार घंटे लड़ता रहा। इस बीच क्रैसस के 5 सौ सैनिक मारे गए। रोमन स्पार्टाकस को जिंदा नहीं पकड़ पाए।

अपना अंतिम समय जानकर उसने अपनी तलवार उछालकर ऐसा मारा कि क्रैसस का सिर धड़ से आसमान में उछल पड़ा। क्रैसस का धड़ घोड़े सहित जमीन पर लोट गया। पर क्रैसस के सैनिकों ने ताबड़तोड़ इतना प्रहार किया कि स्पार्टाकस के भी कई टुकड़े हो गए। पर कोई स्पार्टाकस के किसी टुकड़े को नहीं पा सका। स्पार्टाकस को सजा देने की कसम पूरी नहीं हो सकी थी। क्रैसस की बचे हुए स्पार्टाकस सेना के छः हजार सैनिकों को कापुआ से रोम तक दोनों तरफ सलीबों (लकड़ी के खंभों में कील ठोककर) पर लटका दिया गया। ये सभी दास सैनिक एक माह में छः मास तक चिंघाड़-चिंघाड़ कर रोमन साम्राज्य के विनाश की इच्छा करते हुए तथा स्पार्टाकस के गीत गाते हुए प्राण त्याग दिए। स्पार्टाकस ने विश्व में प्रथम जन विद्रोह किया था। भारत में आर्यो (नायक ब्रह्मा, विष्णु, शंकर) के खिलाफ मूल भारतीय दासों के नायक भेद, वर्चिन, शंबर, वृत्रासुर, महिषासुर ने विद्रोह किया था। इन दास नायकों की नींव पर ही मार्क्सवादी वर्ग संघर्ष की इमारत खड़ी हुई।

चमकीली आंखों की बुल-बुल था पंजों में बाज दबाए, लिए जा रहा था अंबर में, वह मेघों में उसे उड़ाए, बिंधी हुई टेढ़े पंजों से, बुलबुल करती करुण रुदन, बड़े रोब से तभी बाज ने कहा, बात तू मेरी सुन- अरी अभागिन जरा बता तो क्यों तू चीं चीं करती है? तुझसे कहीं शक्तिशाली मैं, तू तो व्यर्थ तड़पती है, जैसे चाहे तू रो-गा ले, फिर भी मैं ले जाऊंगा, जहां, जिस जगह मन हो, मेरा छोड़ूंगा या खाऊंगा।।

संदर्भ एवं टिप्पणी

1. पयोदोर कोरोस्विन- प्राचीन विश्व इतिहास का परिचय, प्रगति प्रकाशन 17 जुबोव्की, बुलवार, मास्को, पृष्ठ-149
2. पयोदार-वही पृष्ठ 228-229
3. हेसिअड-बुलबुल और बाज-प्रगति प्रकाशन मास्को।

साभार :

शूद्रों का प्राचीनतम इतिहास पेज संख्या 143 से 171 तक एस. के. पंजम